|| श्री गणेशाय नमः ||

Deepak Parihar

17/06/1986

10:39 PM

New Delhi, India

द्वारा निर्मित

SALASAR balaji

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

नाम	Deepak Parihar
लिंग	पुरुष
जन्म दिनांक	17/06/1986
जन्म समय	10:39 PM
जन्म स्थान	New Delhi, India
अक्षांश	27 N 34
देशांतर	78 E 04
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	23:40:04

ज्योतिषीय विवरण

लग्न	मकर
लग्न स्वामी	शनि
चंद्र राशि	तुला
चंद्र राशि स्वामी	शुक्र
नक्षत्र	चित्रा
नक्षत्र स्वामी	मंगल
चरण	3
तिथि	शुक्ल दशमी
पाया	चांदी
योग	परिघ
करण	गर
वर्ण	शूद्र
तत्त्व	वायु
वश्य	मानव
योनी	व्याघ्र
गण	राक्षस
नाड़ी	मध्य
नामाक्षर	पे, पो, रा, री
सूर्य राशी	मिथुन
सूर्य राशी स्वामी	बुध
डेकानेट	1
डेकानेट स्वामी	बुध

सामान्य कुंडली विवरण

अशुभ अंक

राशी	मिथुन
महीना	माघ
तिथि	4, 9, 14
दिन	गुरुवार
नक्षत्र	शतभिषा
प्रहर	4
लग्न	कन्या
योग	शुक्ल
करण	तैतिल

शुभाशुभ अंक

सौभाग्य अंक	8
शुभांक	2, 7, 9
अशुभ अंक	4, 8
शुभ वर्ष	17, 26, 35, 44, 53
भाग्यशाली दिन	बुधवार, शुक्रवार, शनिवार
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
अशुभ ग्रह	सूर्य, बृहस्पति
अनुकूल राशी	वृषभ, कन्या, तुला
शुभ लग्न	मेष, कर्क, कन्या, वृश्चिक
शुभ रत्न	लोहा
शुभ समय	सायंकाल
शुभ दिशा	पश्चिम

ग्रहों की स्थिति

ग्रह	वक्री	राशी	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	मिथुन	02:32:37	बुध	मृगशीर्ष	मंगल	छटे
चंद्र	--	तुला	00:43:52	शुक्र	चित्रा	मंगल	दशवें
मंगल	हाँ	धनु	28:58:09	बृहस्पति	उत्तर आषाढ़	सूर्य	बारहवें
बुध	--	मिथुन	26:09:12	बुध	पुनर्वसु	बृहस्पति	छटे
बृहस्पति	--	कुंभ	28:11:46	शनि	पूर्व भाद्रपद	बृहस्पति	दूसरे
शुक्र	--	कर्क	08:36:06	चंद्र	पुष्य	शनि	सातवें
शनि	हाँ	वृश्चिक	11:15:43	मंगल	अनुराधा	शनि	ग्यारहवें
राहु	हाँ	मेष	03:16:29	मंगल	अश्विनि	केतु	चौथे
केतु	हाँ	तुला	03:16:29	शुक्र	चित्रा	मंगल	दशवें
लग्न	--	मकर	27:07:03	शनि	धनिष्ठा	मंगल	पहले

सूर्य
मिथुन
मृगशीर्ष
सम

चंद्र
तुला
चित्रा
बधक

मंगल
धनु
उत्तर आषाढ़
अशुभ

बुध
मिथुन
पुनर्वसु
शुभ

बृहस्पति
कुंभ
पूर्व भाद्रपद
--

शुक्र
कर्क
पुष्य
योगकारक

शनि
वृश्चिक
अनुराधा
--

राहु
मेष
अश्विनि
--

केतु
तुला
चित्रा
--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

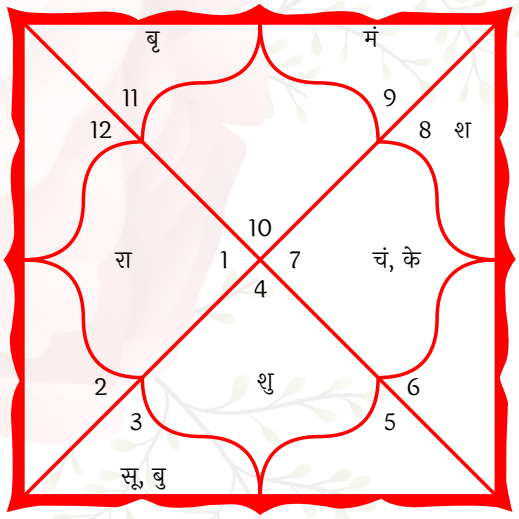

लग्न, जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उगने वाली राशि की डिग्री है। लग्न जन्म या लग्न चार्ट के भीतर सबसे प्रभावशाली और महत्वपूर्ण संकेत है। इस राशि को कुंडली का पहला भाव माना जाएगा और अन्य भावों की गणना राशि चक्र के बाकी राशियों के क्रम में होती है। इस प्रकार, लग्न न केवल आरोही चिन्ह, बल्कि चार्ट के अन्य सभी भावों को भी चित्रित करता है।

चंद्र कुंडली

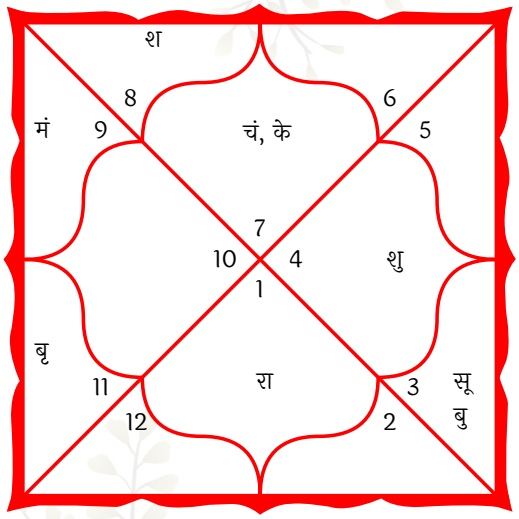

लग्न कुंडली के बाद जिस राशी में चंदर्मा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निमार्ण होता है जो चंद्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्त्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

नवमांश कुंडली(D9)

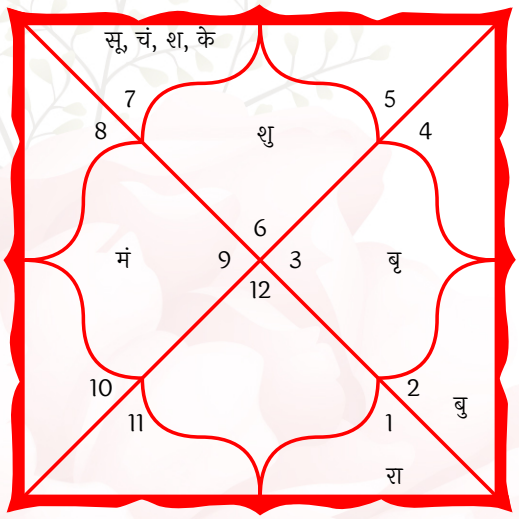

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि गर्ह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वगोर्त्तम की स्थिति उत्पन्न होती है और व्यिक्त शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

भाव संधि

भाव	राशी	भाव मध्य	राशी	भाव संधि
1	मकर	27:07:03	कुंभ	14:09:26
2	मीन	01:11:49	मीन	18:14:12
3	मेष	05:16:35	मेष	22:18:58
4	वृषभ	09:21:21	वृषभ	22:18:58
5	मिथुन	05:16:35	मिथुन	18:14:12
6	कर्क	01:11:49	कर्क	14:09:26
7	कर्क	27:07:03	सिंह	14:09:26
8	कन्या	01:11:49	कन्या	18:14:12
9	तुला	05:16:35	तुला	22:18:58
10	वृश्चिक	09:21:21	वृश्चिक	22:18:58
11	धनु	05:16:35	धनु	18:14:12
12	मकर	01:11:49	मकर	14:09:26

चलित कुंडली

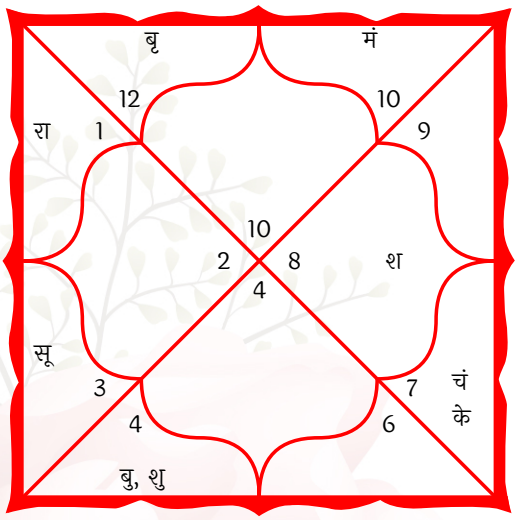

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है की लग्न कुंडली यह दशार्ती है की जन्म के समय क्या लग्न है और सभी गर्ह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है की जन्म के समय किस भाव में कौन सी राशि का पर्भाव है और किस भाव पर कौन सा गर्ह पर्भाव डाल रहा है।

वर्ग कुंडली - I

सूर्य कुंडली

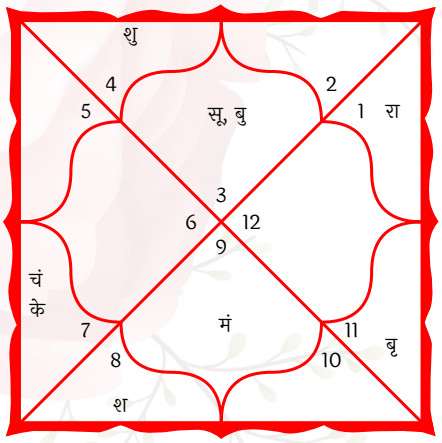

शरीर, स्वास

होरा कुंडली (D2)

वित्त, धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली (D3)

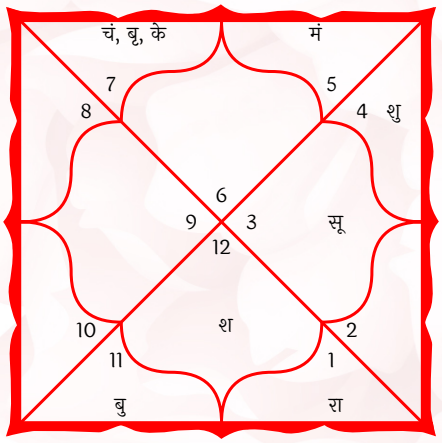

भाई, बहन

चतुर्थांश कुंडली (D4)

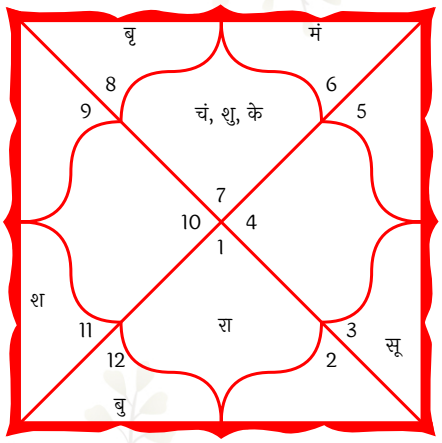

भाग्य

पंचमांश कुंडली (D5)

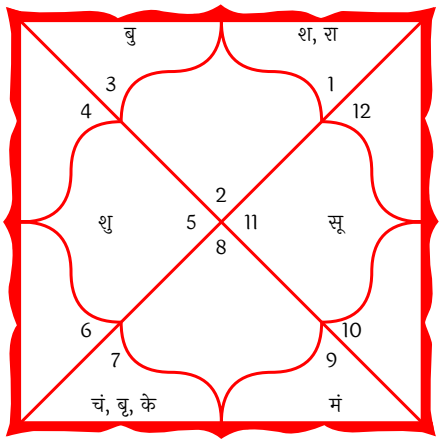

आध्यात्मिकता

षष्ठमांश कुंडली (D6)

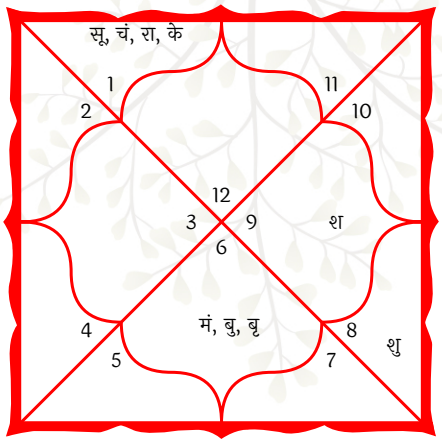

आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली (D7)

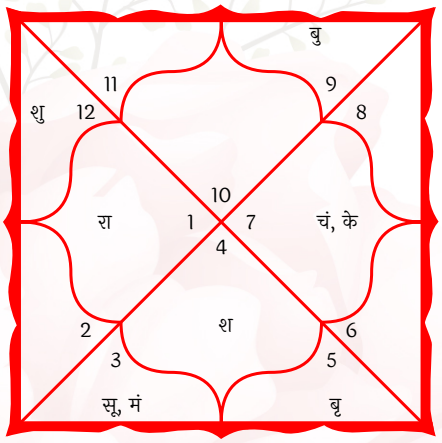

सन्तान

अष्टमांश कुंडली (D8)

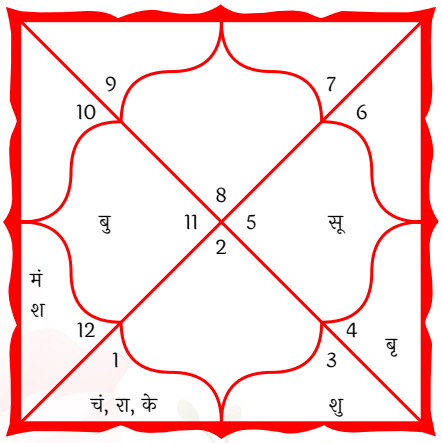

आयु

दशमांश कुंडली (D10)

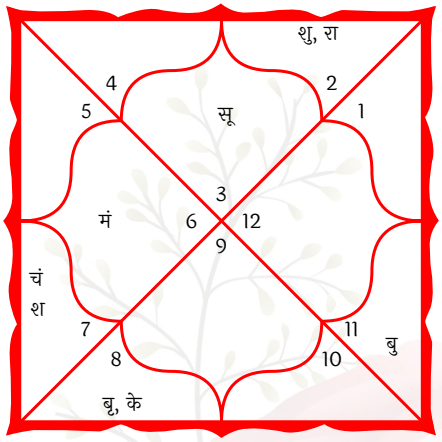

व्यवसाय, जीवनयापन

Your Link

वर्ग कुंडली - I

द्वादशांश कुंडली (D12)

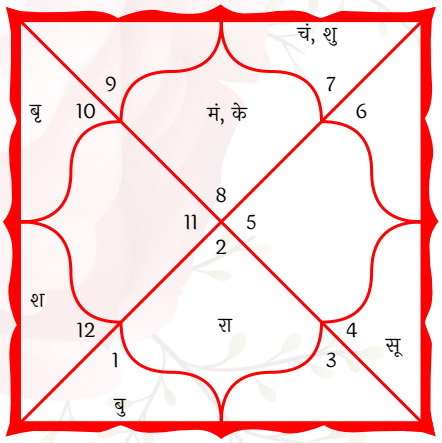

माता-पिता, पैतृक सुख

षोडशांश कुंडली (D16)

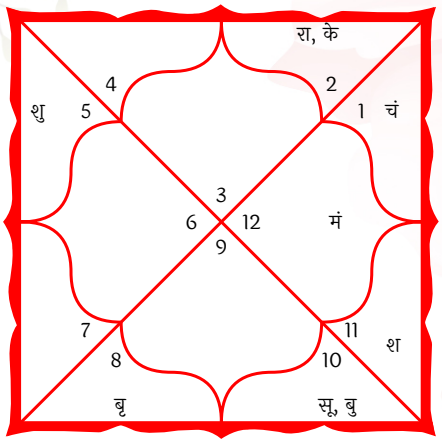

सुख, दुख, वाहन

विशमांश कुंडली (D20)

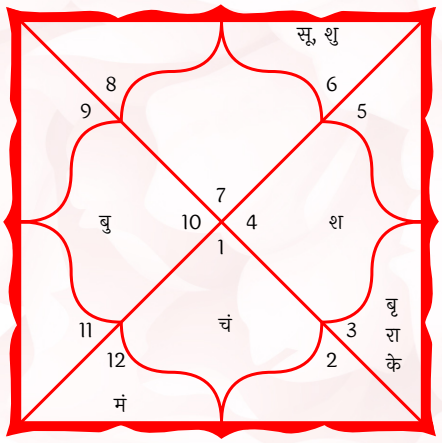

आध्यात्मिक प्रगति एवं पूजा पाठ

चतुर्विंशांश कुंडली (D24)

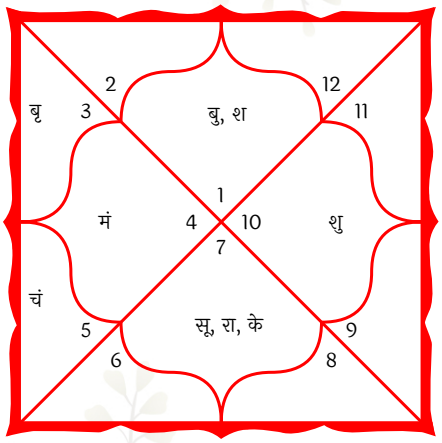

शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षा

भांष कुंडली (D27)

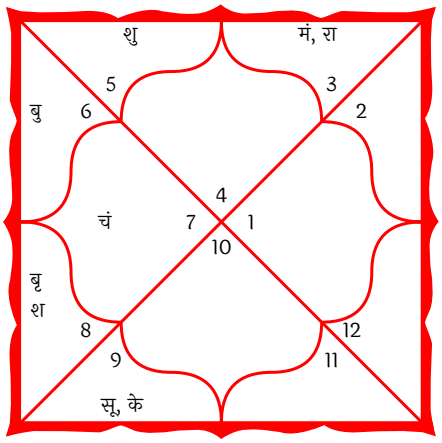

शारीरिक शक्ति, सहनशक्ति

त्रिषमांष कुंडली (D30)

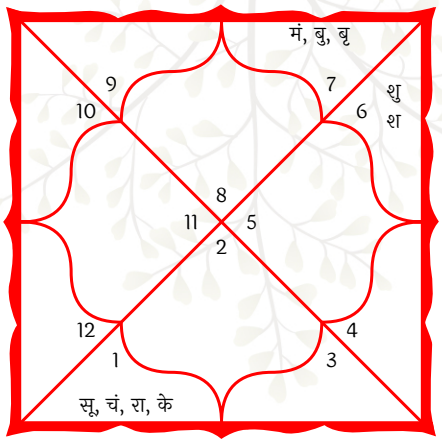

बुराई, विपत्तियां

खवेदांश कुंडली (D40)

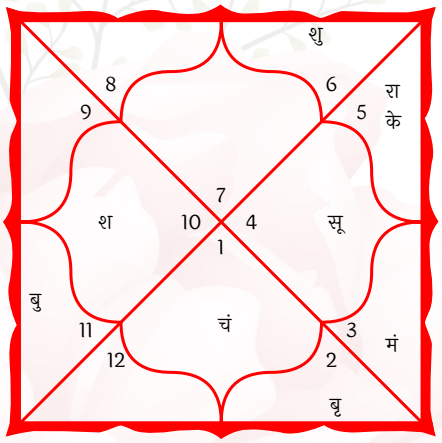

शुभ और अशुभ प्रभाव

अक्षवेदांश कुंडली (D45)

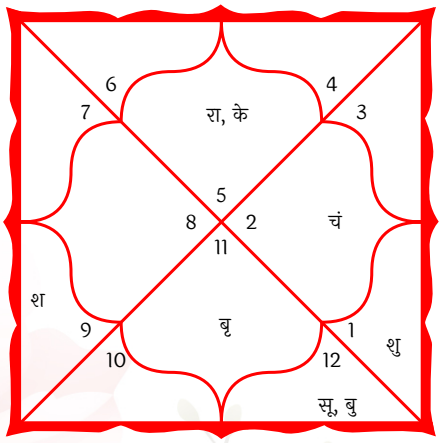

जातक का चरित्र और आचरण

षष्टयांश कुंडली (D60)

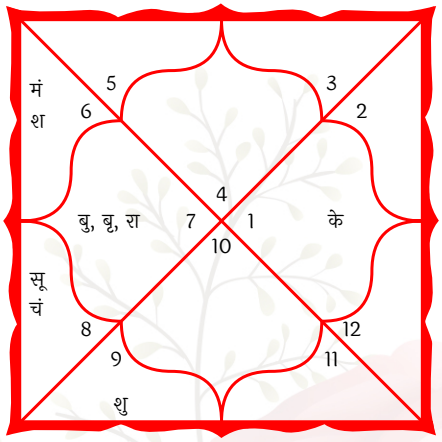

सामान्य खुशियाँ

Your Link

पंचधा मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
सूर्य	--	मि	मि	स	मि	श	श	श	श
चंद्र	मि	--	स	मि	स	स	स	श	श
मंगल	मि	मि	--	श	मि	स	स	श	मि
बुध	मि	श	स	--	स	मि	स	स	स
बृहस्पति	मि	मि	मि	श	--	श	स	मि	मि
शुक्र	श	श	स	मि	स	--	मि	मि	स
शनि	श	श	श	मि	स	मि	--	मि	श
राहू	श	श	श	स	स	मि	मि	--	श
केतु	श	श	मि	स	स	मि	श	श	--

तत्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
सूर्य	--	श	श	श	श	मि	श	मि	श
चंद्र	श	--	मि	श	श	मि	मि	श	श
मंगल	श	मि	--	श	मि	श	मि	श	मि
बुध	श	श	श	--	श	मि	श	मि	श
बृहस्पति	श	श	मि	श	--	श	मि	मि	श
शुक्र	मि	मि	श	मि	श	--	श	मि	मि
शनि	श	मि	मि	श	मि	श	--	श	मि
राहू	मि	श	श	मि	मि	मि	श	--	श
केतु	श	श	मि	श	श	मि	मि	श	--

Your Link

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
सूर्य	--	स	स	श	स	स	प.श	स	प.श
चंद्र	स	--	मि	स	श	मि	मि	प.श	प.श
मंगल	स	प.मि	--	प.श	प.मि	श	मि	प.श	प.मि
बुध	स	प.श	श	--	श	प.मि	श	मि	श
बृहस्पति	स	स	प.मि	प.श	--	प.श	मि	प.मि	स
शुक्र	स	स	श	प.मि	श	--	स	प.मि	मि
शनि	प.श	स	स	स	मि	स	--	स	स
राहू	स	प.श	प.श	मि	मि	प.मि	स	--	प.श
केतु	प.श	प.श	प.मि	श	श	प.मि	स	प.श	--

संक्षिप्त रूप:-

- मि : मित्र
- स : सम
- श : शत्रु
- प.मि : परम मित्र
- प.श : परम शत्रु

Your Link

कृष्णमूर्ति पद्धति ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	राशी	अंश	राशि स्वामी	भाव
सूर्य	--	मिथुन	02:38:25	बुध	6
चंद्र	--	तुला	00:49:40	शुक्र	10
मंगल	हाँ	धनु	29:03:57	बृहस्पति	12
बुध	--	मिथुन	26:14:59	बुध	6
बृहस्पति	--	कुंभ	28:17:34	शनि	2
शुक्र	--	कर्क	08:41:54	चंद्र	7
शनि	हाँ	वृश्चिक	11:21:31	मंगल	11
राहु	हाँ	मेष	03:22:16	मंगल	4
केतु	हाँ	तुला	03:22:16	शुक्र	10
लग्न	--	मकर	27:12:51	शनि	1

ग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
सूर्य	मृगशीर्ष	मंगल	केतु	बुध
चंद्र	चित्रा	मंगल	बुध	चंद्र
मंगल	उत्तर आषाढ़	सूर्य	मंगल	शुक्र
बुध	पुनर्वसु	बृहस्पति	केतु	बृहस्पति
बृहस्पति	पूर्व भाद्रपद	बृहस्पति	शुक्र	शनि
शुक्र	पुष्य	शनि	शुक्र	चंद्र
शनि	अनुराधा	शनि	चंद्र	बृहस्पति
राहु	अश्विनि	केतु	सूर्य	शनि
केतु	चित्रा	मंगल	शुक्र	मंगल
लग्न	धनिष्ठा	मंगल	बृहस्पति	शुक्र

कृष्णमूर्ति पद्धति भाव संधि और कुंडली

भाव	राशी	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	सब	सब-सब
1	मकर	27:12:51	शनि	धनिष्ठा	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
2	मीन	07:41:03	बृहस्पति	उत्तर भाद्रपद	शनि	केतु	राहु
3	मेष	12:05:41	मंगल	अश्विनि	केतु	बुध	शुक्र
4	वृषभ	09:27:09	शुक्र	कृत्तिका	सूर्य	शुक्र	शनि
5	मिथुन	03:19:53	बुध	मृगशीर्ष	मंगल	शुक्र	चंद्र
6	मिथुन	27:39:56	बुध	पुनर्वसु	बृहस्पति	शुक्र	राहु
7	कर्क	27:12:51	चंद्र	अश्लेषा	बुध	बृहस्पति	शुक्र
8	कन्या	07:41:03	बुध	उत्तर फल्गुनी	सूर्य	केतु	बुध
9	तुला	12:05:41	शुक्र	स्वाति	राहु	शनि	राहु
10	वृश्चिक	09:27:09	मंगल	अनुराधा	शनि	शुक्र	बृहस्पति
11	धनु	03:19:53	बृहस्पति	मूल	केतु	सूर्य	शनि
12	धनु	27:39:56	बृहस्पति	उत्तर आषाढ़	सूर्य	चंद्र	बृहस्पति

कुंडली

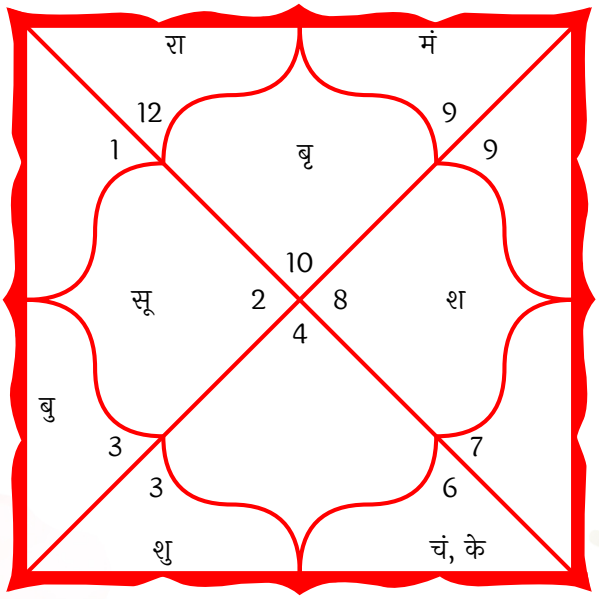

Your Link

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	0	1	0	0	0	1	3
वृषभ	0	0	0	1	0	0	1	0	2
मिथुन	1	0	1	0	1	1	1	1	6
कर्क	1	1	1	0	1	0	1	0	5
सिंह	0	1	1	1	0	0	1	0	4
कन्या	1	0	1	0	0	0	1	0	3
तुला	0	0	1	1	1	0	0	1	4
वृश्चिक	0	0	0	1	0	0	1	1	3
धनु	1	1	1	0	1	1	1	1	7
मकर	1	0	1	0	0	1	0	0	3
कुंभ	1	0	0	1	0	0	1	0	3
मीन	1	1	1	1	0	0	0	1	5

अभिप्राय

पिता

व्यक्तिगत प्रभाव

राजकीय कृपा

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

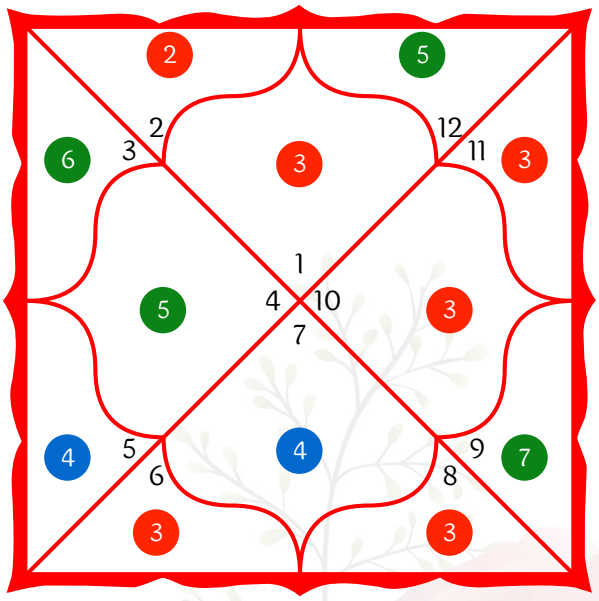

चंद्र भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	1	1	0	1	1	0	6
वृषभ	0	0	1	0	1	1	0	0	3
मिथुन	0	0	0	1	0	0	0	1	2
कर्क	0	1	0	0	0	0	0	0	1
सिंह	1	1	1	1	1	0	0	0	5
कन्या	0	0	1	1	1	1	1	0	5
तुला	0	1	1	1	0	1	0	1	5
वृश्चिक	1	0	0	0	1	1	0	1	4
धनु	1	1	0	1	1	0	0	0	4
मकर	1	0	1	1	1	1	1	0	6
कुंभ	0	0	1	0	1	0	0	0	2
मीन	1	1	0	1	0	1	1	1	6

अभिप्राय

माता | मन | भावना | बुद्धि

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

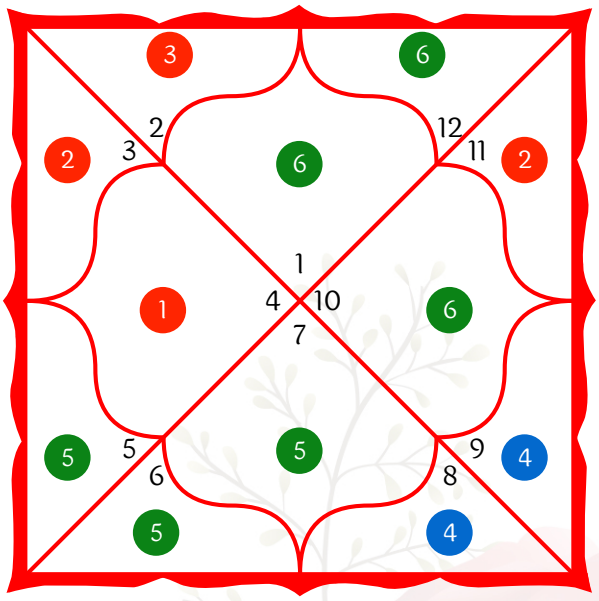

Your Link

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	0	1	0	0	0	0	2
वृषभ	0	0	0	0	0	1	1	0	2
मिथुन	0	0	1	0	0	1	1	1	4
कर्क	0	0	1	0	1	0	1	0	3
सिंह	1	1	0	1	0	0	1	0	4
कन्या	0	0	1	0	0	0	1	0	2
तुला	1	0	1	1	0	0	0	1	4
वृश्चिक	1	0	0	1	1	0	1	1	5
धनु	0	1	1	0	1	1	0	0	4
मकर	0	0	1	0	1	0	0	1	3
कुंभ	0	0	0	0	0	1	1	0	2
मीन	1	1	1	0	0	0	0	1	4

अभिप्राय

भाई-बहन | भूमि संपत्ति | दुर्घटना | विवाद

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

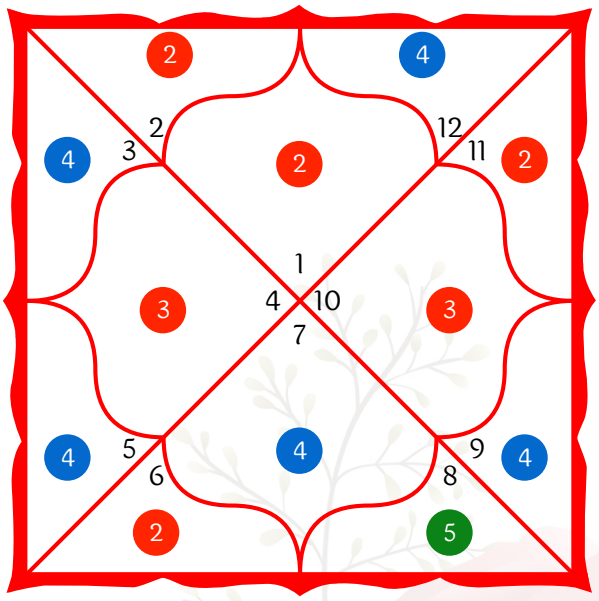

Your Link

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	0	1	0	0	0	1	3
वृषभ	1	1	0	1	0	1	1	0	5
मिथुन	0	0	1	1	0	0	1	1	4
कर्क	0	1	1	0	1	1	1	0	5
सिंह	0	1	1	1	0	1	1	1	6
कन्या	0	0	1	0	1	1	1	0	4
तुला	1	0	1	1	0	1	0	1	5
वृश्चिक	1	1	0	1	0	1	1	1	6
धनु	0	0	1	0	1	0	1	0	3
मकर	0	1	1	0	1	0	0	1	4
कुंभ	1	0	0	1	0	1	1	1	5
मीन	0	1	1	1	0	1	0	0	4

अभिप्राय

रिश्तेदार | विवेक बुद्धि | शिक्षा | वक्ता

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

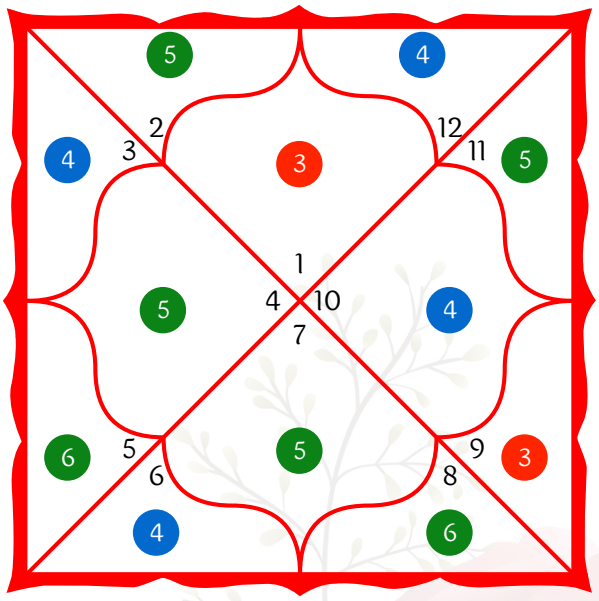

Your Link

बृहस्पति भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	1	0	1	1	1	1	1	7
वृषभ	0	0	0	0	1	1	0	1	3
मिथुन	1	1	1	1	0	0	0	1	5
कर्क	1	0	1	1	0	0	0	1	4
सिंह	1	1	0	0	1	1	0	0	4
कन्या	1	0	1	1	1	0	0	1	5
तुला	0	0	1	1	0	0	1	1	4
वृश्चिक	0	1	0	1	1	1	0	1	5
धनु	1	0	1	0	1	1	0	0	4
मकर	1	0	1	0	0	0	1	1	4
कुंभ	1	1	0	1	1	0	0	1	5
मीन	1	0	1	1	1	1	1	0	6

अभिप्राय

संतान | सम्मान | धार्मिक कर्म | सीखना | भाग्य

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

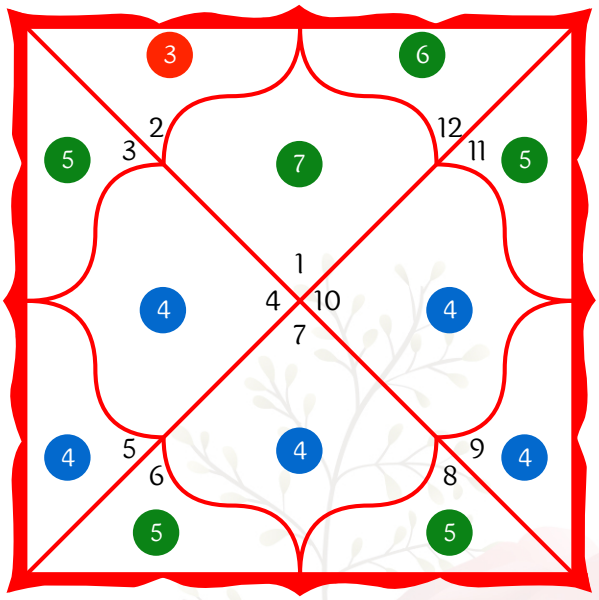

Your Link

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	1	0	1	0	1	5
वृषभ	1	1	1	0	0	1	0	1	5
मिथुन	0	1	0	0	1	0	1	0	3
कर्क	0	0	0	0	0	1	1	0	2
सिंह	0	1	1	1	0	1	1	1	6
कन्या	0	1	0	0	1	1	1	1	5
तुला	0	1	1	1	1	1	0	0	5
वृश्चिक	0	1	1	1	1	1	0	1	6
धनु	0	1	0	0	1	0	0	0	2
मकर	1	1	0	0	0	0	1	1	4
कुंभ	0	1	1	1	0	1	1	1	6
मीन	0	0	0	0	0	1	1	1	3

अभिप्राय

पति या पत्नी | विवाह | वाहन

आभूषण

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

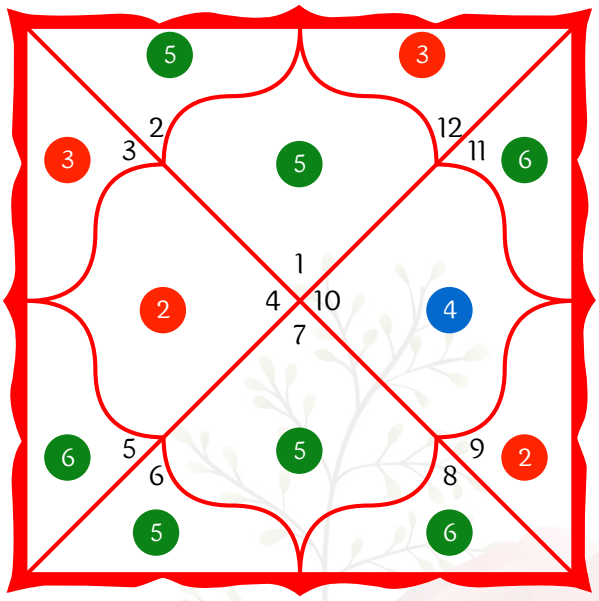

Your Link

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	1	1	0	0	1	1	5
वृषभ	0	0	1	1	0	1	0	0	3
मिथुन	1	0	0	0	1	1	0	1	4
कर्क	1	0	0	0	1	0	0	0	2
सिंह	0	1	0	0	0	0	0	0	1
कन्या	1	0	1	0	0	0	1	0	3
तुला	0	0	1	0	0	0	0	1	2
वृश्चिक	0	0	1	1	0	0	0	1	3
धनु	1	1	0	0	1	1	0	0	4
मकर	1	0	0	1	1	0	1	1	5
कुंभ	0	0	1	1	0	0	0	0	2
मीन	1	1	0	1	0	0	1	1	5

अभिप्राय

कर्मचारी | जीविका | कष्ट व शोक

सूचक

- शुभ
- अशुभ
- मिश्रित

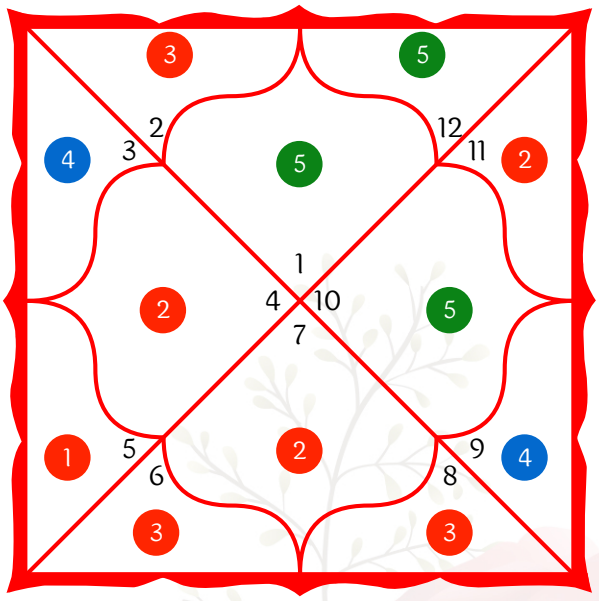

Your Link

लग्न भिन्नाष्टक वर्ग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	1	0	0	1	0	0	1	0	3
वृषभ	1	0	1	0	1	1	0	0	4
मिथुन	0	0	0	1	1	0	0	1	3
कर्क	0	1	0	1	1	1	0	0	4
सिंह	1	1	0	0	1	1	1	0	5
कन्या	1	0	1	1	0	1	1	0	5
तुला	0	0	1	0	1	1	0	1	4
वृश्चिक	1	0	0	1	1	1	1	1	6
धनु	0	1	1	0	1	0	0	0	3
मकर	0	0	0	1	0	0	1	0	2
कुंभ	0	0	1	0	1	1	1	0	4
मीन	1	1	0	1	1	1	0	1	6

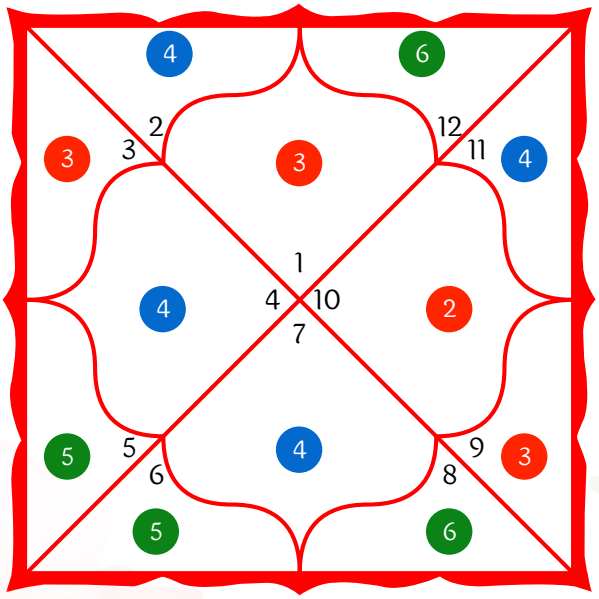

सूचक

शुभ अशुभ मिश्रित

Your Link

सर्वाष्टक वग

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	लग्न	कुल
मेष	3	6	2	3	7	5	5	0	31
वृषभ	2	3	2	5	3	5	3	0	23
मिथुन	6	2	4	4	5	3	4	0	28
कर्क	5	1	3	5	4	2	2	0	22
सिंह	4	5	4	6	4	6	1	0	30
कन्या	3	5	2	4	5	5	3	0	27
तुला	4	5	4	5	4	5	2	0	29
वृश्चिक	3	4	5	6	5	6	3	0	32
धनु	7	4	4	3	4	2	4	0	28
मकर	3	6	3	4	4	4	5	0	29
कुंभ	3	2	2	5	5	6	2	0	25
मीन	5	6	4	4	6	3	5	0	33

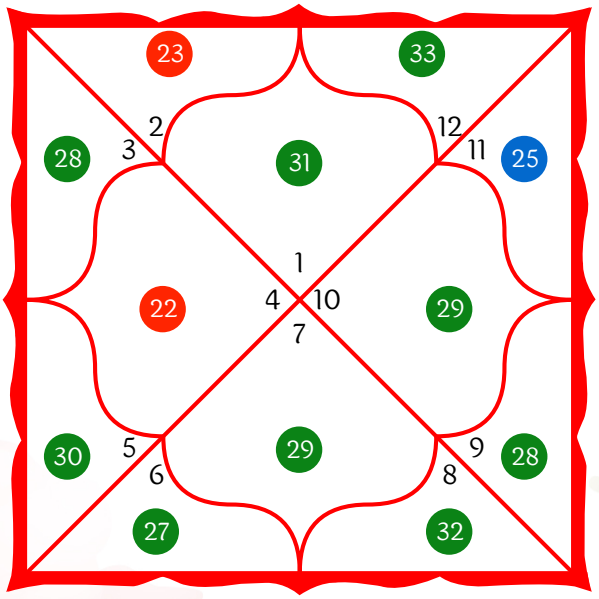

सूचक

शुभ अशुभ मिश्रित

Your Link

विम्शोत्तरी दशा - I

महादशा -> अंतर्दशा - I

मंगल

29-07-1982 18:10
29-07-1989 18:10

मंगल	26-12-1982 18:10
राहू	13-01-1984 18:10
बृहस्पति	19-12-1984 18:09
शनि	28-01-1986 18:09
बुध	24-01-1987 18:09
केतु	20-06-1987 18:09
शुक्र	20-08-1988 18:09
सूर्य	26-12-1988 18:08
चंद्र	29-07-1989 18:10

राहू

29-07-1989 18:10
29-07-2007 18:10

राहू	10-04-1992 18:10
बृहस्पति	03-09-1994 18:09
शनि	09-07-1997 18:09
बुध	27-01-2000 18:08
केतु	14-02-2001 18:08
शुक्र	14-02-2004 18:08
सूर्य	07-01-2005 18:08
चंद्र	07-07-2006 18:08
मंगल	29-07-2007 18:10

बृहस्पति

29-07-2007 18:10
29-07-2023 18:10

बृहस्पति	16-09-2009 18:09
शनि	28-03-2012 18:08
बुध	04-07-2014 18:07
केतु	10-06-2015 18:06
शुक्र	09-02-2018 18:05
सूर्य	27-11-2018 18:05
चंद्र	28-03-2020 18:04
मंगल	06-03-2021 18:03
राहू	29-07-2023 18:10

शनि

29-07-2023 18:10
29-07-2042 18:10

शनि	01-08-2026 18:09
बुध	10-04-2029 18:09
केतु	19-05-2030 18:09
शुक्र	19-07-2033 18:08
सूर्य	01-07-2034 18:07
चंद्र	31-01-2036 18:06
मंगल	12-03-2037 18:06
राहू	18-01-2040 18:06
बृहस्पति	29-07-2042 18:10

बुध

29-07-2042 18:10
29-07-2059 18:10

बुध	26-12-2044 18:09
केतु	23-12-2045 18:09
शुक्र	23-10-2048 18:09
सूर्य	29-08-2049 18:08
चंद्र	29-01-2051 18:08
मंगल	25-01-2052 18:08
राहू	12-08-2054 18:07
बृहस्पति	18-11-2056 18:06
शनि	29-07-2059 18:10

केतु

29-07-2059 18:10
29-07-2066 18:10

केतु	26-12-2059 18:10
शुक्र	26-02-2061 18:10
सूर्य	02-07-2061 18:09
चंद्र	02-02-2062 18:09
मंगल	29-06-2062 18:09
राहू	17-07-2063 18:09
बृहस्पति	23-06-2064 18:08
शनि	01-08-2065 18:08
बुध	29-07-2066 18:10

Your Link

विम्शोत्तरी दशा - II

महादशा -> अंतर्दशा - II

शुक्र

29-07-2066 18:10
29-07-2086 18:10

शुक्र	29-11-2069 18:10
सूर्य	29-11-2070 18:10
चंद्र	29-07-2072 18:10
मंगल	29-09-2073 18:10
राहू	29-09-2076 18:10
बृहस्पति	29-05-2079 18:09
शनि	29-07-2082 18:08
बुध	29-05-2085 18:08
केतु	29-07-2086 18:10

सूर्य

29-07-2086 18:10
29-07-2092 18:10

सूर्य	16-11-2086 18:09
चंद्र	16-05-2087 18:09
मंगल	22-09-2087 18:08
राहू	15-08-2088 18:08
बृहस्पति	02-06-2089 18:08
शनि	14-05-2090 18:07
बुध	20-03-2091 18:06
केतु	26-07-2091 18:05
शुक्र	29-07-2092 18:10

चंद्र

29-07-2092 18:10
29-07-2102 18:10

चंद्र	29-05-2093 18:10
मंगल	29-12-2093 18:10
राहू	29-06-2095 18:10
बृहस्पति	29-10-2096 18:09
शनि	29-05-2098 18:08
बुध	29-10-2099 18:08
केतु	29-05-2100 18:08
शुक्र	29-01-2102 18:08
सूर्य	29-07-2102 18:10

विम्शोत्तरी दशा - III

अंतर्दशा -> प्रत्यंतर दशा - I

शनि

29-07-2023 18:10
01-08-2026 18:10

शनि	20-01-2024 05:34
बुध	23-06-2024 15:46
केतु	26-08-2024 19:58
शुक्र	27-02-2025 07:57
सूर्य	20-04-2025 11:33
चंद्र	20-07-2025 17:32
मंगल	23-09-2025 21:44
राहू	08-03-2026 08:32
बृहस्पति	01-08-2026 18:10

बुध

01-08-2026 18:10
10-04-2029 18:10

बुध	19-12-2026 00:46
केतु	14-02-2027 13:22
शुक्र	26-07-2027 01:22
सूर्य	13-09-2027 12:09
चंद्र	04-12-2027 06:09
मंगल	30-01-2028 18:45
राहू	25-06-2028 03:08
बृहस्पति	03-11-2028 07:55
शनि	10-04-2029 18:10

केतु

10-04-2029 18:10
19-05-2030 18:10

केतु	04-05-2029 00:46
शुक्र	10-07-2029 12:46
सूर्य	30-07-2029 11:34
चंद्र	02-09-2029 17:34
मंगल	26-09-2029 00:10
राहू	24-11-2029 20:34
बृहस्पति	17-01-2030 01:22
शनि	20-03-2030 05:34
बुध	19-05-2030 18:10

शुक्र

19-05-2030 18:10
19-07-2033 18:10

शुक्र	29-11-2030 18:10
सूर्य	25-01-2031 18:09
चंद्र	30-04-2031 18:09
मंगल	07-07-2031 06:09
राहू	28-12-2031 06:08
बृहस्पति	30-05-2032 06:07
शनि	30-11-2032 18:06
बुध	12-05-2033 06:06
केतु	19-07-2033 18:10

सूर्य

19-07-2033 18:10
01-07-2034 18:10

सूर्य	05-08-2033 20:34
चंद्र	03-09-2033 08:34
मंगल	23-09-2033 07:22
राहू	13-11-2033 14:33
बृहस्पति	29-12-2033 04:57
शनि	22-02-2034 08:33
बुध	09-04-2034 19:20
केतु	29-04-2034 18:08
शुक्र	01-07-2034 18:10

चंद्र

01-07-2034 18:10
31-01-2036 18:10

चंद्र	19-08-2034 06:10
मंगल	22-09-2034 12:10
राहू	18-12-2034 00:09
बृहस्पति	06-03-2035 00:08
शनि	06-06-2035 06:07
बुध	27-08-2035 00:07
केतु	30-09-2035 06:07
शुक्र	04-01-2036 06:07
सूर्य	31-01-2036 18:10

Your Link

विम्शोत्तरी दशा - IV

अंतर्दशा -> प्रत्यंतर दशा - II

मंगल

31-01-2036 18:10
12-03-2037 18:10

मंगल	24-02-2036 00:46
राहू	22-04-2036 21:10
बृहस्पति	15-06-2036 01:58
शनि	18-08-2036 06:10
बुध	14-10-2036 18:46
केतु	07-11-2036 01:22
शुक्र	13-01-2037 13:22
सूर्य	02-02-2037 12:10
चंद्र	12-03-2037 18:10

राहू

12-03-2037 18:10
18-01-2040 18:10

राहू	16-08-2037 15:45
बृहस्पति	02-01-2038 10:57
शनि	14-06-2038 21:45
बुध	09-11-2038 06:08
केतु	08-01-2039 02:32
शुक्र	29-06-2039 02:31
सूर्य	19-08-2039 09:42
चंद्र	13-11-2039 21:41
मंगल	18-01-2040 18:10

बृहस्पति

18-01-2040 18:10
29-07-2042 18:10

बृहस्पति	20-05-2040 08:34
शनि	14-10-2040 18:09
बुध	23-02-2041 22:56
केतु	16-04-2041 03:44
शुक्र	18-09-2041 03:43
सूर्य	02-11-2041 18:07
चंद्र	18-01-2042 18:06
मंगल	13-03-2042 22:54
राहू	29-07-2042 18:10

वर्तमान दशा

दशा नाम	ग्रह	आरम्भ तिथि	समाप्ति तिथि
महादशा	शनि	29-07-2023 18:10	29-07-2042 18:10
अंतर्दशा	शनि	29-07-2023 18:10	01-08-2026 18:10
प्रत्यंतर दशा	शुक्र	26-08-2024 19:58	27-02-2025 07:58
सूक्ष्म दशा	शुक्र	26-08-2024 19:58	26-09-2024 21:58
प्राण दशा	राहु	06-09-2024 14:41	11-09-2024 02:59

*ध्यान दे - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते है।

योगिनी दशा - I

मंगला (1 वर्ष)

28-11-1985 04:52
28-11-1986 04:52

मंगला	08-12-1985 04:52
पिंगला	28-12-1985 04:52
धान्य	28-01-1986 04:52
भ्रामरी	10-03-1986 04:51
भद्रिका	30-04-1986 04:51
उल्का	30-06-1986 04:51
सिद्धि	09-09-1986 04:51
संकटा	28-11-1986 04:52

पिंगला (2 वर्ष)

28-11-1986 04:52
28-11-1988 04:52

पिंगला	07-01-1987 04:51
धान्य	07-03-1987 04:51
भ्रामरी	27-05-1987 04:50
भद्रिका	06-09-1987 04:50
उल्का	06-01-1988 04:50
सिद्धि	26-05-1988 04:50
संकटा	05-11-1988 04:49
मंगला	28-11-1988 04:52

धान्य (3 वर्ष)

28-11-1988 04:52
28-11-1991 04:52

धान्य	28-02-1989 04:52
भ्रामरी	28-06-1989 04:52
भद्रिका	28-11-1989 04:52
उल्का	28-05-1990 04:52
सिद्धि	28-12-1990 04:52
संकटा	28-08-1991 04:52
मंगला	28-09-1991 04:52
पिंगला	28-11-1991 04:52

भ्रामरी (4 वर्ष)

28-11-1991 04:52
28-11-1995 04:52

भ्रामरी	08-05-1992 04:51
भद्रिका	28-11-1992 04:51
उल्का	28-07-1993 04:51
सिद्धि	08-05-1994 04:51
संकटा	28-03-1995 04:50
मंगला	08-05-1995 04:49
पिंगला	28-07-1995 04:48
धान्य	28-11-1995 04:52

भद्रिका (5 वर्ष)

28-11-1995 04:52
28-11-2000 04:52

भद्रिका	07-08-1996 04:51
उल्का	07-06-1997 04:51
सिद्धि	27-05-1998 04:50
संकटा	07-07-1999 04:50
मंगला	27-08-1999 04:50
पिंगला	07-12-1999 04:50
धान्य	07-05-2000 04:50
भ्रामरी	28-11-2000 04:52

उल्का (6 वर्ष)

28-11-2000 04:52
28-11-2006 04:52

उल्का	28-11-2001 04:52
सिद्धि	28-01-2003 04:52
संकटा	28-05-2004 04:51
मंगला	28-07-2004 04:51
पिंगला	28-11-2004 04:51
धान्य	28-05-2005 04:51
भ्रामरी	28-01-2006 04:51
भद्रिका	28-11-2006 04:52

Your Link

योगिनी दशा - II

सिद्धि (7 वर्ष)

28-11-2006 04:52
28-11-2013 04:52

सिद्धि	07-04-2008 04:52
संकटा	27-10-2009 04:52
मंगला	06-01-2010 04:52
पिंगला	26-05-2010 04:52
धान्य	26-12-2010 04:52
भ्रामरी	06-10-2011 04:52
भद्रिका	26-09-2012 04:51
उल्का	28-11-2013 04:52

संकटा (8 वर्ष)

28-11-2013 04:52
28-11-2021 04:52

संकटा	07-09-2015 04:51
मंगला	27-11-2015 04:50
पिंगला	07-05-2016 04:49
धान्य	07-01-2017 04:49
भ्रामरी	27-11-2017 04:48
भद्रिका	06-01-2019 04:48
उल्का	06-05-2020 04:47
सिद्धि	28-11-2021 04:52

मंगला (1 वर्ष)

28-11-2021 04:52
28-11-2022 04:52

मंगला	08-12-2021 04:52
पिंगला	28-12-2021 04:52
धान्य	28-01-2022 04:52
भ्रामरी	10-03-2022 04:51
भद्रिका	30-04-2022 04:51
उल्का	30-06-2022 04:51
सिद्धि	09-09-2022 04:51
संकटा	28-11-2022 04:52

पिंगला (2 वर्ष)

28-11-2022 04:52
28-11-2024 04:52

पिंगला	07-01-2023 04:51
धान्य	07-03-2023 04:51
भ्रामरी	27-05-2023 04:50
भद्रिका	06-09-2023 04:50
उल्का	06-01-2024 04:50
सिद्धि	26-05-2024 04:50
संकटा	05-11-2024 04:49
मंगला	28-11-2024 04:52

धान्य (3 वर्ष)

28-11-2024 04:52
28-11-2027 04:52

धान्य	28-02-2025 04:52
भ्रामरी	28-06-2025 04:52
भद्रिका	28-11-2025 04:52
उल्का	28-05-2026 04:52
सिद्धि	28-12-2026 04:52
संकटा	28-08-2027 04:52
मंगला	28-09-2027 04:52
पिंगला	28-11-2027 04:52

भ्रामरी (4 वर्ष)

28-11-2027 04:52
28-11-2031 04:52

भ्रामरी	08-05-2028 04:51
भद्रिका	28-11-2028 04:51
उल्का	28-07-2029 04:51
सिद्धि	08-05-2030 04:51
संकटा	28-03-2031 04:50
मंगला	08-05-2031 04:49
पिंगला	28-07-2031 04:48
धान्य	28-11-2031 04:52

Your Link

योगिनी दशा - III

भद्रिका (5 वर्ष)

28-11-2031 04:52
28-11-2036 04:52

भद्रिका	07-08-2032 04:51
उल्का	07-06-2033 04:51
सिद्धि	27-05-2034 04:50
संकटा	07-07-2035 04:50
मंगला	27-08-2035 04:50
पिंगला	07-12-2035 04:50
धान्य	07-05-2036 04:50
भ्रामरी	28-11-2036 04:52

उल्का (6 वर्ष)

28-11-2036 04:52
28-11-2042 04:52

उल्का	28-11-2037 04:52
सिद्धि	28-01-2039 04:52
संकटा	28-05-2040 04:51
मंगला	28-07-2040 04:51
पिंगला	28-11-2040 04:51
धान्य	28-05-2041 04:51
भ्रामरी	28-01-2042 04:51
भद्रिका	28-11-2042 04:52

सिद्धि (7 वर्ष)

28-11-2042 04:52
28-11-2049 04:52

सिद्धि	07-04-2044 04:52
संकटा	27-10-2045 04:52
मंगला	06-01-2046 04:52
पिंगला	26-05-2046 04:52
धान्य	26-12-2046 04:52
भ्रामरी	06-10-2047 04:52
भद्रिका	26-09-2048 04:51
उल्का	28-11-2049 04:52

संकटा (8 वर्ष)

28-11-2049 04:52
28-11-2057 04:52

संकटा	07-09-2051 04:51
मंगला	27-11-2051 04:50
पिंगला	07-05-2052 04:49
धान्य	07-01-2053 04:49
भ्रामरी	27-11-2053 04:48
भद्रिका	06-01-2055 04:48
उल्का	06-05-2056 04:47
सिद्धि	28-11-2057 04:52

मंगला (1 वर्ष)

28-11-2057 04:52
28-11-2058 04:52

मंगला	08-12-2057 04:52
पिंगला	28-12-2057 04:52
धान्य	28-01-2058 04:52
भ्रामरी	10-03-2058 04:51
भद्रिका	30-04-2058 04:51
उल्का	30-06-2058 04:51
सिद्धि	09-09-2058 04:51
संकटा	28-11-2058 04:52

पिंगला (2 वर्ष)

28-11-2058 04:52
28-11-2060 04:52

पिंगला	07-01-2059 04:51
धान्य	07-03-2059 04:51
भ्रामरी	27-05-2059 04:50
भद्रिका	06-09-2059 04:50
उल्का	06-01-2060 04:50
सिद्धि	26-05-2060 04:50
संकटा	05-11-2060 04:49
मंगला	28-11-2060 04:52

*ध्यान दे – सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते है।

चर दशा - I

कन्या (2 वर्ष)

17-06-1986 22:39
17-06-1988 22:39

तुला	18-08-1986 22:39
वृश्चिक	19-10-1986 22:39
धनु	20-12-1986 22:39
मकर	21-02-1987 22:39
कुम्भ	22-04-1987 22:39
मीन	23-06-1987 22:39
मेष	24-08-1987 22:39
वृष	25-10-1987 22:39
मिथुन	26-12-1987 22:39
कर्क	27-02-1988 22:39
सिंह	28-04-1988 22:39
कन्या	17-06-1988 22:39

तुला (2 वर्ष)

17-06-1988 22:39
17-06-1990 22:39

वृश्चिक	18-08-1988 22:39
धनु	19-10-1988 22:39
मकर	20-12-1988 22:39
कुम्भ	21-02-1989 22:39
मीन	22-04-1989 22:39
मेष	23-06-1989 22:39
वृष	24-08-1989 22:39
मिथुन	25-10-1989 22:39
कर्क	26-12-1989 22:39
सिंह	27-02-1990 22:39
कन्या	28-04-1990 22:39
तुला	17-06-1990 22:39

वृश्चिक (1 वर्ष)

17-06-1990 22:39
17-06-1991 22:39

धनु	17-07-1990 22:39
मकर	16-08-1990 22:39
कुम्भ	15-09-1990 22:39
मीन	15-10-1990 22:39
मेष	14-11-1990 22:39
वृष	14-12-1990 22:39
मिथुन	13-01-1991 22:39
कर्क	12-02-1991 22:39
सिंह	14-03-1991 22:39
कन्या	13-04-1991 22:39
तुला	13-05-1991 22:39
वृश्चिक	17-06-1991 22:39

चर दशा - II

धनु (9 वर्ष)		मकर (3 वर्ष)		कुम्भ (2 वर्ष)	
17-06-1991 22:39		17-06-2000 22:39		17-06-2003 22:39	
17-06-2000 22:39		17-06-2003 22:39		17-06-2005 22:39	
वृश्चिक	15-03-1992 22:39	धनु	17-09-2000 22:39	मकर	18-08-2003 22:39
तुला	12-12-1992 22:39	वृश्चिक	17-12-2000 22:39	धनु	19-10-2003 22:39
कन्या	08-09-1993 22:39	तुला	17-03-2001 22:39	वृश्चिक	20-12-2003 22:39
सिंह	04-06-1994 22:39	कन्या	17-06-2001 22:39	तुला	21-02-2004 22:39
कर्क	03-03-1995 22:39	सिंह	17-09-2001 22:39	कन्या	22-04-2004 22:39
मिथुन	30-11-1995 22:39	कर्क	17-12-2001 22:39	सिंह	23-06-2004 22:39
वृष	26-08-1996 22:39	मिथुन	17-03-2002 22:39	कर्क	24-08-2004 22:39
मेष	23-05-1997 22:39	वृष	17-06-2002 22:39	मिथुन	25-10-2004 22:39
मीन	19-02-1998 22:39	मेष	17-09-2002 22:39	वृष	26-12-2004 22:39
कुम्भ	15-11-1998 22:39	मीन	17-12-2002 22:39	मेष	27-02-2005 22:39
मकर	11-08-1999 22:39	कुम्भ	17-03-2003 22:39	मीन	28-04-2005 22:39
धनु	17-06-2000 22:39	मकर	17-06-2003 22:39	कुम्भ	17-06-2005 22:39

चर दशा - III

मीन (9 वर्ष)

17-06-2005 22:39
17-06-2014 22:39

मेष	16-03-2006 22:39
वृष	13-12-2006 22:39
मिथुन	09-09-2007 22:39
कर्क	05-06-2008 22:39
सिंह	04-03-2009 22:39
कन्या	01-12-2009 22:39
तुला	28-08-2010 22:39
वृश्चिक	25-05-2011 22:39
धनु	21-02-2012 22:39
मकर	17-11-2012 22:39
कुम्भ	13-08-2013 22:39
मीन	17-06-2014 22:39

मेष (12 वर्ष)

17-06-2014 22:39
17-06-2026 22:39

वृष	12-06-2015 22:39
मिथुन	07-06-2016 22:39
कर्क	02-06-2017 22:39
सिंह	28-05-2018 22:39
कन्या	24-05-2019 22:39
तुला	20-05-2020 22:39
वृश्चिक	16-05-2021 22:39
धनु	12-05-2022 22:39
मकर	08-05-2023 22:39
कुम्भ	04-05-2024 22:39
मीन	30-04-2025 22:39
मेष	17-06-2026 22:39

वृष (2 वर्ष)

17-06-2026 22:39
17-06-2028 22:39

मिथुन	18-08-2026 22:39
कर्क	19-10-2026 22:39
सिंह	20-12-2026 22:39
कन्या	21-02-2027 22:39
तुला	22-04-2027 22:39
वृश्चिक	23-06-2027 22:39
धनु	24-08-2027 22:39
मकर	25-10-2027 22:39
कुम्भ	26-12-2027 22:39
मीन	27-02-2028 22:39
मेष	28-04-2028 22:39
वृष	17-06-2028 22:39

चर दशा - IV

मिथुन (8 वर्ष)		कर्क (1 वर्ष)		सिंह (9 वर्ष)	
17-06-2028 22:39		17-06-2036 22:39		17-06-2037 22:39	
17-06-2036 22:39		17-06-2037 22:39		17-06-2046 22:39	
वृष	14-02-2029 22:39	मिथुन	17-07-2036 22:39	कर्क	16-03-2038 22:39
मेष	12-10-2029 22:39	वृष	16-08-2036 22:39	मिथुन	13-12-2038 22:39
मीन	09-06-2030 22:39	मेष	15-09-2036 22:39	वृष	09-09-2039 22:39
कुम्भ	06-02-2031 22:39	मीन	15-10-2036 22:39	मेष	05-06-2040 22:39
मकर	04-10-2031 22:39	कुम्भ	14-11-2036 22:39	मीन	04-03-2041 22:39
धनु	01-06-2032 22:39	मकर	14-12-2036 22:39	कुम्भ	01-12-2041 22:39
वृश्चिक	29-01-2033 22:39	धनु	13-01-2037 22:39	मकर	28-08-2042 22:39
तुला	26-09-2033 22:39	वृश्चिक	12-02-2037 22:39	धनु	25-05-2043 22:39
कन्या	24-05-2034 22:39	तुला	14-03-2037 22:39	वृश्चिक	21-02-2044 22:39
सिंह	21-01-2035 22:39	कन्या	13-04-2037 22:39	तुला	17-11-2044 22:39
कर्क	18-09-2035 22:39	सिंह	13-05-2037 22:39	कन्या	13-08-2045 22:39
मिथुन	17-06-2036 22:39	कर्क	17-06-2037 22:39	सिंह	17-06-2046 22:39

*ध्यान दे – सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते है।

कालसर्प दोष

जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहो के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योंकि कुंडली के एक भाव में राहु और दूसरे भाव में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहो से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहो के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संभंधित परेशानिया, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाव में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसिलए मात्र कालसर्प सुनकर भयभीत हो जाने की जरुरत नहीं बिल्क उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके पर्भावों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमता कही जायेगी। कालसर्प योग कुंडली में ख़राब अवश्य माना जाता है किन्तु विधवत तरह से यिद इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्धि योग भी बन सकता है।

महत्वपूर्ण कालसर्प दोष के 12 प्रकार।

- अनन्त
- कुलिक
- वासुकी
- शंखपाल
- पद्म
- महापद्म
- तक्षक
- कर्कोटक
- शंखचूड़
- घातक
- विषधर
- शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष

कालसर्प की उपस्थिति नहीं है

आपकी कुंडली में कालसर्प दोष नहीं है।

कालसर्प नाम

नहीं

कालसर्प दोष का प्रभाव

कालसर्प दोष के उपाय

- कुंडली में कालसर्प योग के नकारात्मक प्रभावों को बेअसर करने के लिए आप कुछ मंत्रों का जाप कर सकते हैं। मंत्र श्री सर्प सूक्त, सर्प मंत्र, विष्णु पंचाक्षरी मंत्र और महा मृत्युंजय मंत्र हैं।
- आप पवित्र नदी में डुबकी लगाने के लिए रामेश्वरम मंदिर भी जा सकते हैं।
- आपको कभी भी किसी सांप और सरीसृप आदि को चोट या मारना नहीं चाहिए। आप अपने पूर्वजों के कारण पीड़ित हो सकते हैं जिन्होंने सांप और सरीसृपों को मार डाला।
- कालसर्प योग से छुटकारा पाने के लिए आप गोमेद और लहसुनिया स्टोन भी पहन सकते हैं। हालांकि इस रत्न को धारण करने से पहले किसी विद्वान ज्योतिषी की सलाह अवश्य लें।
- घर में पूजा स्थल या पूजा कक्ष में एक सक्रिय कालसर्प योग यंत्र स्थापित करें और उसकी प्रतिदिन पूजा करें।

मांगलिक विश्लेषण - I

मांगलिक दोष क्या होता है?

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आिद में मंगल गर्ह, लग्न से पर्थम, चतुथर्, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

जब मंगल लग्न में होता है तो मंगल लग्न में मंगल के साथ होने पर मांगलिक दोष अधिक प्रबल माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार यदि लड़का और लड़की दोनों का मांगलिक दोष रद्द हो रहा है तो उन्हें सुखी वैवाहिक जीवन में कोई रुकावट नहीं आएगी है।

वहीं दूसरी ओर यदि यह मांगलिक दोष रद्द नहीं किया गया तो उन्हें जीवन में अनावश्यक समस्याओं और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

इसलिए किसी को भी अपनी कुंडली का मिलान करने के बाद ही अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत करनी चाहिए। मांगलिक दोष को ठीक से रद्द करने के बाद जातक को एक शांतिपूर्ण और समृद्ध से भरा जीवन प्राप्त होगा।

लग्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे।
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम्।।

मांगलिक विश्लेषण

आप की कुंडली में मांगलिक दोष है

आपकी कुंडली में निम्न मंगल दोष पाया गया है।

मांगलिक का प्रकार

निम्न मंगल दोष

मांगलिक विश्लेषण - II

मांगलिक फल

आपकी कुंडली में निम्न मंगल दोष है और वर्तमान में मंगल दोष की सीमा प्रभावी है और इसलिए उचित सावधानी की आवश्यकता है। आपकी कुंडली में मांगलिक दोष है। जन्म कुण्डली में मंगल लग्न से बारहवें भाव में तथा चन्द्र कुण्डली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है।

मांगलिक दोष के उपाय

- वर और वधू दोनों का मांगलिक दोष होने पर विवाह सफल हो सकता है।
- मंगलवार का व्रत करना भी उत्तम उपाय है। व्यक्ति को केवल दूध या फलों के रस का ही सेवन करना चाहिए और केवल तुअर दाल का ही सेवन करना चाहिए।
- व्यक्ति को प्रतिदिन हनुमान चालीसा, गायत्री मंत्र और मंगल चंडिका स्तोत्र जैसे मंत्रों का पाठ करना चाहिए। नवग्रह मंत्र का जाप करने से भी मदद मिलती है, क्योंकि यह मंत्र गलत तरीके से रखे गए मंगल को शांत करता है।
- मंगलवार के दिन दान करना मांगलिक व्यक्तियों के लिए एक उपाय माना जाता है।

साढ़ेसाती विश्लेषण - I

साढ़ेसाती क्या होता है?

साढ़े साती का तात्पर्य साढ़े सात वर्ष की अवधि से है, जिसमें शनि तीन राशियों से होकर गुजरता है, चंद्र राशि, एक चंद्रमा से पहले और एक उसके बाद। साढ़े साती तब शुरू होती है जब शनि (शनि) जन्म चंद्र राशि से बारहवीं राशि में प्रवेश करता है और जब शनि जन्म चंद्र राशि से दूसरी राशि छोड़ता है तो समाप्त होता है।

चूँकि शनि को एक राशि को पार करने में लगभग ढाई साल लगते हैं जिसे शनि की ढैया कहा जाता है, इसलिए तीन राशियों को पार करने में लगभग साढ़े सात साल लगते हैं और इसीलिए इसे साढ़े साती के नाम से जाना जाता है। सामान्यतः साढ़ेसाती जीवन काल में तीन बार आती है-पहली बाल्यावस्था में, दूसरी यौवन में और तीसरी वृद्धावस्था में।

प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा और माता-पिता पर पड़ता है। दूसरी साढ़ेसाती का प्रभाव व्यवसाय, वित्त और परिवार पर पड़ता है। आखिरी वाला स्वास्थ्य को किसी और चीज से ज्यादा प्रभावित करता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है?

साढ़ेसाती दोष उपस्थिति नहीं है

नहीं, आप पर इस समय साढ़ेसाती का प्रभाव नहीं है।

विचार करने की दिनांक	07-09-2024
शनि राशि	वृश्चिक
चंद्र राशि	तुला
वक्री शनि	हाँ

साढ़ेसाती विश्लेषण - II

चंद्र राशि	चरण	आरम्भ तिथि	समाप्ति तिथि	प्रभाव
तुला	1	03-07-1979	28-12-1980	लाभप्रद
तुला	2	28-12-1980	19-11-1983	लाभप्रद
तुला	3	19-11-1983	01-03-1986	हानिप्रद
तुला	1	18-08-2008	18-10-2010	लाभप्रद
तुला	2	18-10-2010	05-01-2013	लाभप्रद
तुला	3	05-01-2013	21-12-2015	हानिप्रद
तुला	1	30-09-2037	06-12-2039	लाभप्रद
तुला	2	06-12-2039	09-11-2042	लाभप्रद
तुला	3	09-11-2042	06-02-2045	हानिप्रद
तुला	1	30-11-2066	08-10-2069	लाभप्रद
तुला	2	08-10-2069	22-12-2071	लाभप्रद
तुला	3	22-12-2071	11-12-2074	हानिप्रद
तुला	1	19-09-2096	22-11-2098	लाभप्रद
तुला	2	22-11-2098	01-11-2101	लाभप्रद
तुला	3	01-11-2101	24-01-2104	हानिप्रद

साढ़ेसाती प्रभाव और उपचार

साढ़ेसाती उपाय

- अपने अधीनस्थ, नौकर, गरीब और निम्न वर्ग के लोगों को सम्मान दें।
- अपने माता-पिता और बुजुर्गों की सेवा और सम्मान करें।
- श्री हनुमान चालीसा का पाठ करें।

रत्न उपाय विचार

प्रत्येक ग्रह का अपना अनूठा संबंधित ज्योतिषीय रत्न होता है जो ग्रह के समान ही ब्रह्मांडीय रंग ऊर्जा को विकीर्ण करता है। रत्न सकारात्मक किरणों के परावर्तन या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा कार्य करते हैं। उपयुक्त रत्न को धारण करने से मणि फिल्टर के रूप में उस पर संबंधित ग्रह के सकारात्मक प्रभाव में वृद्धि हो सकती है और पहनने वाले के शरीर में केवल सकारात्मक स्पंदनों को प्रवेश करने की अनुमति मिलती है।

जीवन रत्न

नीलम

लग्न, शरीर और शरीर से सम्बंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, नाम, दीघार्यु, प्रतिष्ठा, जीवन उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है। इसलिए लग्न के स्वामी अथार्त लग्नेश से सम्बंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है। इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए।

कारक रत्न

हीरा

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्ध, उच्च शिक्षा, संतान, अपर्त्यिाशित धन-प्राप्ति आदि का कारक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अथार्त पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है। इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं। पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न

पन्ना

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है। यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का कारक है। यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मो में किये गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरुप आनंद की ओर संकेत करता है। नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं। इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है।

जीवन रत्न

नीलम

विकल्प	एमेथिस्ट	**दिन**	शनिवार
उंगली	मध्यमा	**देव**	शनि
धातु	शरीर के वजन के अनुसार	**धातु**	चांदी

विवरण

नीलम रत्न शनि द्वारा शासित है। नीलम धारण करने से अच्छा स्वास्थ्य, धन, दीर्घायु, सुख, समृद्धि, नाम और यश की प्राप्ति होती है और साथ ही हड्डी के पुराने रोग आदि से भी रक्षा होती है।

पहनने का समय

नीलम को शनिवार के दिन सूर्यास्त के बाद धारण करना चाहिए।

उंगली

मंत्र जाप के बाद नीलम को दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

भार व धातु

नीलम आपके शरीर के वजन के अनुसार जैसे: 1 कैरेट 10 किलो के बराबर होता है। उदाहरण के लिए यदि आपके शरीर का वजन लगभग 52 किलो है, तो आपको 5 कैरेट से अधिक नीलम चुनना होगा। इसे सिल्वर या 8 एलॉय रिंग के मिश्रण में सेट करना चाहिए। अंगूठी ऐसी बनानी चाहिए कि पत्थर त्वचा को छुए।

मंत्र

एक बार अनुष्ठान पूरा हो जाने पर व्यक्ति को फूल और धूप से पत्थर की पूजा करनी चाहिए। नीलम के लिए निम्नलिखित मंत्र का 23000 बार जाप करना है।

।। ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

विकल्प

कोई भी नीलम के विकल्प जैसे ब्लू जिरकोन, एमेथिस्ट, ब्लू टूमलाइन, लैपिस लाजुली, ब्लू स्पिनल और नीली का उपयोग कर सकते है।

प्राण प्रतिष्ठा

नीलम धारण करने से पहले अंगूठी को गाय के ताजे दूध या गंगा जल में दो दिन तक डुबो कर रखना चाहिए।

सावधानी

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि लाल मूंगा को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद और वैदूर्य और उनके विकल्प के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।

कारक रत्न

हीरा

विकल्प	ओपल / जिरकॉन	**दिन**	शुक्रवार
उंगली	अनामिका	**देव**	शुक्र
धातु	शरीर के वजन के अनुसार	**धातु**	प्लेटिनम / चांदी

विवरण

हीरा शुक्र द्वारा शासित सबसे महंगा रत्न है। हीरा धारण करने से चेहरे पर शांति, सिद्धि, धन, समृद्धि और चमक आती है। हीरा धारण करने से व्यक्ति निडर, बुद्धिमान और व्यवहार कुशल बनता है। धर्म शास्त्रों के अनुसार। हीरा बुरी आत्माओ के अशुभ प्रभाव से बचाता है।

भार व धातु

हीरा कम से कम अपने शरीर के वजन के अनुसार ही पहनना चाहिए जैसे: 1 कैरेट 10 किलो के बराबर होता है। उदाहरण के लिए यदि आपके शरीर का वजन लगभग 57 किलो है, तो आपको 5 कैरेट से अधिक हीरा चुनना होगा। इसे प्लेटिनम रिंग में सेट करना चाहिए। अंगूठी ऐसी बनानी चाहिए कि हीरा त्वचा को छुए।

पहनने का समय

हीरा शुक्रवार की सुबह (सूर्योदय के एक घंटे के भीतर) चंद्र मास के उज्ज्वल आधे पर पहनना चाहिए।

मंत्र

एक बार पूरा हो जाने के बाद व्यक्ति को फूल और धूप के साथ हिरे की पूजा करनी चाहिए। हीरे के लिए निम्नलिखित मंत्र का 16,000 बार जाप करना है।

।। ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ।।

प्राण प्रतिष्ठा

हीरा धारण करने से पहले अंगूठी को गाय के ताजे दूध या गंगाजल में दो दिन तक डुबो कर रखना चाहिए।

उंगली

मंत्र जाप के बाद हीरा दाहिने हाथ की अनामिका में धारण करना चाहिए।

विकल्प

डायमंड के विकल्प जैसे ऑस्ट्रेलियन ओपल, व्हाइट सैफायर, व्हाइट जिरकोन या व्हाइट टूमलाइन का भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

सावधानी

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि माणिक्य, पर्ल, लाल मूंगा और पुखराज के साथ हीरा नहीं पहनना चाहिए।

भाग्य रत्न

पन्ना

विकल्प	पेरिडॉट	**दिन**	बुधवार
उंगली	कनिष्ठा	**देव**	बुध
धातु	शरीर के वजन के अनुसार	**धातु**	सोना

विवरण

भारतीय वैदिक ज्योतिष के अनुसार पन्ना पत्थर पर बुध का शासन है। पन्ना धारण करने से अच्छा स्वास्थ्य, व्यापार, मजबूत शरीर, धन, संपत्ति, अच्छी नजर आती है। पन्ना बुरी आत्माओं, कीड़ों, बुरी नजर के बुरे प्रभाव से बचाता है। पन्ना मिर्गी, पागलपन, बुरे सपने आदि को दूर करता है और सुरक्षा प्रदान करता है।

भार व धातु

अपने शरीर के वजन के अनुसार पन्ना चुनें जैसे: 1 कैरेट 10 किग्रा के बराबर होता है। उदाहरण के लिए यदि आपके शरीर का वजन लगभग 52 किलो है, तो आपको 5 कैरेट से अधिक पन्ना चुनना होगा। इसे सोने की अंगूठी में स्थापित करना चाहिए। अंगूठी ऐसी बनानी चाहिए कि पत्थर त्वचा को छुए।

पहनने का समय

पन्ना बुधवार की सुबह (सूर्योदय के एक घंटे के भीतर) चंद्र मास के शुक्ल पक्ष में धारण करना चाहिए।

मंत्र

एक बार अनुष्ठान पूरा हो जाने पर व्यक्ति को फूल और धूप से पत्थर की पूजा करनी चाहिए। पन्ना के लिए निम्न मंत्र का 9000 बार जाप करना है।

।। ॐ ब्रां ब्रीं सः बुधाय नमः ।।

प्राण प्रतिष्ठा

पन्ना धारण करने से पहले अंगूठी को गाय के ताजे दूध या गंगाजल में दो दिन तक डुबो कर रखना चाहिए।

उंगली

मंत्र जाप के बाद पन्ना दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में धारण करना चाहिए।

विकल्प

पन्ना के विकल्प जैसे ग्रीन ओनाक्स, पेरिडॉट, ग्रीन जिक्रोन, ग्रीन एगेट या जेड का भी उपयोग किया जा सकता है।

सावधानी

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि लाल मूंगे, मोती या पुखराज के साथ पन्ना नहीं पहना जाना चाहिए।

रुद्राक्ष फल

सात + तेरह मुखी रुद्राक्ष

॥ ॐ हुं नमः ॥
॥ ॐ केलिम् कमवदेवाय नमः ॥

आपको सात मुखी और तेरह मुखी रुद्राक्ष के संयोजन को धारण करने की सलाह दी जाती है।

सात मुखी रुद्राक्ष ऐश्वर्य की देवता महालक्ष्मी का प्रतिनिधित्व करता है। इसे धारण करने वाले को समृद्धि, ऐश्वर्य और उन्नति के नए अवसर मिलते हैं। यह व्यापार में होने वाले नुकसान को टालने या घटाने में सहायक होता है। सात मुखी कामदेव स्वरूप हैं, जो धन प्रदान करते हैं। इस रुद्राक्ष के देवता सात माताएं और हनुमान हैं। यह शनि ग्रह द्वारा संचालित है। शुक्र सात मुखी रुद्राक्ष का स्वामी है। शुक्र हमें हमारी रुचियों, हमारे कलात्मक झुकावों, जो हमें खुश करता है, हमारे स्वाद और सुखों को जानने और समझने में सक्षम बनाता है। सतमुखी रुद्राक्ष का शुक्र ग्रह और देवी लक्ष्मी और शुक्र ग्रह के साथ संबंध इस मनके को दिव्य और शुभ बनाता है। शुक्र ग्रह प्रेम और धन से जुड़ा है, जबकि देवी लक्ष्मी व्यक्ति को धन और धन प्रदान करती हैं।

तेरह मुखी रुद्राक्ष तृप्ति का रुद्राक्ष है। यह अत्याचार और इच्छाओं के देवता कामदेव भगवान का प्रतिनिधित्व करता है। तेरह मुखी रुद्राक्ष को धारण करने वाला व्यक्ति आकर्षक व्यक्तित्व का होता है। तेरह मुखी रुद्राक्ष व्यक्ति को उसके द्वारा सोचे गए कार्यों के सही इरादे से जोड़कर उसे करने में उसकी मदद करता है। तेरह मुखी रुद्राक्ष को धारण करने से प्रतिभा, आकर्षण और मनोकामनाओं की पूर्ति का आशीर्वाद प्राप्त होता है। तेरह मुखी रुद्राक्ष दिलों पर राज करता है। तेरह मुखी रुद्राक्ष उन सभी भ्रमों को दूर करने में मदद करता है जो व्यक्ति को उसकी इच्छाओं और कामो में बाधा डालते हैं।

शुभाशुभ अंक

2	8	9
भाग्यांक	मूलांक	नामांक

आपका नाम	Deepak Parihar
जन्म दिनांक	17-6-1986
मूलांक	8
मूलांक स्वामी	शनि
मित्र अंक	2,1,4
सम अंक	3,7,9
शत्रु अंक	3,6
शुभ दिन	रविवार, सोमवार, शनिवार
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	Amethyst, Blue Tourmaline
शुभ देवता	भैरव
शुभ धातु	लोहा
शुभ रंग	काला
शुभ मंत्र	|| ओम शंग शनिश्चराय नमः ||

अंक ज्योतिषीय फल - I

आपके बारे में

आपका मूलांक 8 है, तो मूलांक 8 का स्वामी शनि है। शनि के प्रभाव से आप जीवन में धीरे-धीरे ऊपर उठेंगे। बाधाओं और कठिनाइयों को पार करके सफलता प्राप्त करना आपके स्वभाव में है। आप असफलताओं से विचलित नहीं होंगे, हालांकि कभी-कभी आप निराशा में डूब सकते हैं। आपका कट्टर शत्रु सुस्ती है और यही आपके निराशा का कारण बनेगा। इसलिए, विलंब न करें। शनि के प्रभाव से आप कई महत्वपूर्ण कार्य करेंगे, जिससे आपको नाम, सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। बहुत से लोग आपकी कार्यशैली को नहीं समझ पाएंगे। इससे आपके कई आलोचक पैदा होंगे।

आपमें दिखावे की प्रवृत्ति कम होगी। यह लोगों को आपको एक कठोर और सख्त व्यक्ति के रूप सामने आएंगे, जबकि आपके दिल की गहराई में आप काफी भावुक और दयालु होंगे। अधिकतर आप अपने काम को लेकर चिंतित रहेंगे। आपकी प्रवृत्ति खुद को अपने व्यवसाय तक सीमित रखने की होगी। यह रवैया कई प्रतिकूल लोगों को उत्पन्न करेगा। आपमें त्याग की भावना होगी। आप किसी प्रयास के लिए वांछित परिश्रम, समर्पण और बलिदान से कभी नहीं डगमगाएंगे। इसलिए बाधाओं को पार करके आप निश्चित रूप से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। शनि के प्रभाव में आने वाले जातक मेहनती और संघर्षशील होते हैं। चूंकि उन्हें कई बाधाओं को पार करना पड़ता है, इसलिए उन्हें कुछ देर से सफलता मिलती है लेकिन उनकी उपलब्धियां स्थिर और स्थायी होती हैं।

शुभ व्रत समय

शनिवार का व्रत शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से शुरू करना चाहिए। शनिवार का व्रत लगातार 8 शनिवार तक करना चाहिए। शनिवार का व्रत, उपवास के दौरान एक बार भोजन करने की अनुमति है, लेकिन याद रहे भोजन बिना नमक का होना चाहिए। इस व्रत में दूध, पानी, जूस, फल आदि का सेवन किया जा सकता है।

दान के लिए कुछ काली वस्तु भेट की जा सकती है जैसे उदाहरण तौर पे काली दाल, काले तिल, काले कपड़े, काले फूल आदि। शनिवार का व्रत, व्रत कथा, एक प्राचीन कथा या संक्षिप्त महाकाव्य की तरह, पढ़ा या सुना जाता है। कई लोग आरती प्रार्थना करते हैं। कई लोग 'ऊँ शं शनैश्चराय नमः' मंत्र का या शनि चालीसा का जाप करते हैं। शनिवार का व्रत, सूर्योदय से सूर्यास्त तक एक दिन का उपवास है।

अंक ज्योतिषीय फल - II

शुभ वास्तु

अपने घर, फ्लैट या शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के लिए पश्चिम दिशा चुनें क्योंकि मूलांक 8 वालों के लिए पश्चिम दिशा एक भाग्यशाली दिशा है। यदि आपके घर का कुल अंक 8 है तो यह आपके लिए अच्छा रहेगा।

किसी शहर के पश्चिमी क्षेत्र में या अपने घर के पश्चिमी भाग में निवास करना आपके लिए लाभकारी रहेगा। इसी तरह इस दिशा में बैठकर अपने महत्वपूर्ण कार्यों को करना आपके लिए अच्छा रहेगा।

शुभ गायत्री मंत्र

शनि के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए आपको प्रतिदिन सुबह स्नान के बाद 11, 21 या 108 बार शनि गायत्री मंत्र का पाठ करना चाहिए।

|| ॐ काकध्वजाय विद्महे खड्गहस्ताय धीमहि तन्नो मन्दः प्रचोदयात् ||

शुभ ध्यान समय

शनि के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए आपको प्रतिदिन सुबह स्नान के बाद 11, 21 या 108 बार शनि गायत्री मंत्र का पाठ करना चाहिए।

|| ॐ काकध्वजाय विद्महे खड्गहस्ताय धीमहि तन्नो मन्दः प्रचोदयात् ||

अंक ज्योतिषीय फल - III

शुभ मंत्र

शनि या बटुक भैरव की पूजा करनी चाहिए। रुद्राक्ष की माला पर प्रतिदिन 108 बार बटुक भैरव मंत्र का जाप करें। आपकी सभी परेशानियां और बीमारियां खत्म हो जाएंगी। बटुक भैरव मंत्र है "ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरुकुरु बटुकाय ह्रीं"।

21 अक्षर का यह मंत्र सभी मनोकामनाएं पूरी कर सकता है। कृष्ण पक्ष की अष्टमी (भारतीय कलैण्डर का आठवां दिन) पर इसका पाठ करना बहुत ही लाभदायक होता है।

आपके के लिए शुभ समय

पाश्चात्य मत के अनुसार सूर्य 23 दिसंबर से 19 फरवरी तक मकर और कुंभ राशि में रहता है और भारतीय विचार से यह 14 जनवरी से 13 मार्च तक इन राशियों में रहता है।

ये हैं शनि के स्वयं के लक्षण। 17 अक्टूबर से 13 नवंबर तक सूर्य तुला राशि में है जो शनि की उच्च राशि है। मूलांक 8 के लोगों के लिए ये तिथियां भाग्यशाली हैं।

मकर

वैदिक नाम	मकर
स्वामी	शनि
प्रतिक	बकरी
तत्त्व	पृथ्वी
भाग्यशाली रत्न	आपल

देहं रूपं च ज्ञानं च वर्णं चैव बलाबलम्।
सुखं दुःखं स्वभावश्च लग्नभावानुरीक्षयेत॥

मकर राशि के जातक संवेदनशील, डरपोक, व्यवसायी, महत्वाकांक्षी, नियंत्रित, आरक्षित, व्यावहारिक, जमीन से जुड़े, कर्तव्य के प्रति जागरूक, जिम्मेदार, आलोचनात्मक और ठंडे स्वभाव के होते हैं। आपको शुरुआती जीवन में संवाद करने में परेशानी हो सकती है।

शायद आप अपर्याप्तता की भावनाओं से पीड़ित हैं। आप इन भावनाओं को केवल आवश्यकता के माध्यम से दूर करते हैं, क्योंकि आपके पास जीवन में अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प है।

> “ आपकी बड़ी महत्वाकांक्षा है और जब तक आप अपने लिए निर्धारित महान ऊंचाइयों तक नहीं पहुंच जाते, तब तक स्थिर न हों। धन, पद और ताकत आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

आपको ऐसा लगता है कि आप जिम्मेदार हैं और बस अपना कर्तव्य निभा रहे हैं।

आपको घुटनों में परेशानी हो सकती है। घुटनों के साथ-साथ कोई भी परेशानी उत्पन्न हो सकती है।

> “ सीखने के लिए आध्यात्मिक पाठ: सुशीलता (हल्का करना)। शनि मकर राशि पर शासन करता है इसलिए शनि आपके जीवन में महत्वपूर्ण होगा।

सुजनता

सकारात्मक लक्षण

जन्म रत्न	नीलमणि
अनुकूल राशी	वृषभ
उपवास का दिन	बुधवार
भाग्यशाली रंग	हरा, नीला, काला, बैंगनी
भाग्यशाली दिन	बुधवार, शुक्रवार, शनिवार
शुभ संख्याएं	3,4,6
अनुकूल दिशा	दक्षिण
विशेषताए	स्त्रीलिंग, पृथक

नकारात्मक लक्षण

गुणवत्ता की आवश्यकता	हास्य की भावना

आपकी कुंडली में
ग्रहों का विश्लेषण

सूर्य

ज्योतिष के अनुसार सूर्य को सबसे शक्ति शाली ग्रह माना जाता है, यह जीवन का स्त्रोत है। सूर्य को स्वास्थ्य, जीवन शक्ति, ऊजार्, शिक्त, पिता , सम्मान, प्रतिष्ठा, गौरव, प्रसिद्धि, साहस और व्यक्तिगत शिक्त को कारक कहा जाता है।

आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
मिथुन	**02:32:37**	**मृगशीर्ष - 3**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
आठंवें भाव	**छटे भाव**	**नहीं/बाल**

सूर्य आपकी कुंडली मे सम है

सूर्य आपकी कुंडली मे छटे भाव मे है

आपको दूसरों की सेवा करने या उनकी मदद करने की आवश्यकता महसूस होती है। या शायद यह है कि आप बस खुद की सेवा करना चाहते हैं। आत्म-दया में डूबने, किसी छोटी सी बात के लिए सहानुभूति मांगने या हाइपोकॉन्ड्रिअक प्रवृत्ति विकसित करने की इच्छा हो सकती है। आप एक वफादार, मेहनती और काबिल कर्मचारी हैं जो आमतौर पर साथी कर्मचारियों के लिए मददगार होते हैं।

> “ इस स्थिति वाले कुछ लोग दबंग होते हैं और उनके साथ या जिनके लिए वे काम करते हैं उनके साथ एक झूठा गर्व विकसित करते हैं। आप एक प्रशासक हो सकते हैं, लेकिन आप एक कर्मचारी बनना पसंद कर सकते हैं।

यदि आप अधिकार की स्थिति में हैं, तो सावधान रहें कि कार्यालय में अत्याचारी न हों। जब आप व्यस्त होते हैं तो आप बहुत खुश होते हैं और आप ऊबने से नफरत करते हैं। आप अपने काम और अपने कार्यस्थल पर बहुत गर्व करते हैं। यह वह जगह है जहाँ आप खुद को साबित करना चाहते हैं और दूसरों से बेहतर बनना चाहते हैं। चिंता, विशेष रूप से चीजों को पूरी तरह से करने की इच्छा, आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती है।

आपको यह सीखने की ज़रूरत है कि कैसे आराम करें और तनाव को अपने ऊपर न आने दें। इस पोजीशन से आपको अपने भौतिक

शरीर की अच्छी देखभाल करने के लिए विशेष रूप से सावधान रहना चाहिए।

सूर्य आपकी कुंडली मे मिथुन राशी मे है

मिथुन राशि के लोग मिलनसार, चतुर, बातूनी, बहुमुखी, जिज्ञासु, बोधगम्य, सहज और तार्किक होते हैं। कभी-कभी वे काफी विरोधाभासी, बेचैन, दोमुंहे, आलोचनात्मक और अधीर भी हो सकते हैं। मिथुन राशि के लोग आनंद लेते हैं और उन्हें ऐसे काम की ज़रूरत होती है जिसमें बहुत अधिक विविधता हो। वे एक ही समय में कई काम करना पसंद करते हैं, कभी-कभी उन्हें नियुक्तियों के लिए देर हो जाती है। वे ऊब से घृणा करते हैं।

> "जेमिनियन एक अनुभव से दूसरे अनुभव में जाते हैं, रास्ते में सभी प्रकार की जानकारी एकत्र करते हैं, लेकिन शायद ही कभी किसी विषय की गहराई तक पहुँचते हैं। वे व्यापक जाते हैं और गहरे नहीं। हठ उनका मजबूत सूट नहीं है। ज्ञान प्राप्त करना और उसका प्रसार करना उनकी असली प्रतिभा है। इसलिए, वे अद्भुत विक्रेता या शिक्षक बनाते हैं यदि वे केवल आधी कहानी के बजाय सभी तथ्यों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त समय तक टिके रहते हैं। भले ही उनके पास सभी तथ्य न हों, क्योंकि उनके पास शब्दों की कमी नहीं है, वे अपनी कहानी को जारी रखेंगे जैसे कि उनके पास सभी तथ्य हैं।

एक मिथुन राशि के लिए बौद्धिक संतुष्टि की तलाश करना महत्वपूर्ण है। मानसिक ठहराव उन्हें बंद कर देता है, इसलिए वे बड़े पैमाने पर पढ़ते हैं और मानसिक उत्तेजना के लिए इस लालसा को पूरा करने के लिए व्यापक रूप से संवाद करते हैं। यह असंतोष उन्हें या तो बहुत महत्वाकांक्षी बना सकता है, या यह उन्हें हरी घास की तलाश में एक चीज़ से दूसरी चीज़ पर कूदने के लिए प्रेरित कर सकता है जो कभी प्रकट नहीं होती है।

जेमिनी आमतौर पर अपने पैरों पर जल्दी से सोचते हैं और किसी भी स्थिति में सही शब्दों का उपयोग करने की क्षमता रखते हैं। उनके पास जबरदस्त बुद्धि और हास्य की अच्छी समझ है। अन्य लोगों को अपने विषयों में तेजी से बदलाव के साथ तालमेल बिठाने में कठिनाई हो सकती है।

> "क्योंकि जेमिनी लोग इतनी जल्दी सोचते हैं, वे अक्सर उनके लिए दूसरे लोगों के वाक्य खत्म कर देते हैं। अपने विचारों को व्यक्त करने की कोशिश करने वाले व्यक्ति के लिए यह सबसे अधिक निराशाजनक हो सकता है। यह सीखने की जरूरत है कि जीभ को कैसे नियंत्रित किया जाए और धीमे लोगों को अपनी राय और विचार व्यक्त करने की अनुमति दी जाए।

चूंकि मिथुन राशि के लोगों में किसी भी मुद्दे के दोनों पक्षों को देखने की क्षमता होती है, इसलिए वे विरोधी दृष्टिकोणों के बीच आगे और पीछे उतार-चढ़ाव कर सकते हैं। वे आमतौर पर इस समय जिस किसी के भी साथ होते हैं, उसकी राय का पक्ष लेते हैं। फिर हालात बदलते ही ये बदल जाते हैं। मिथुन राशि वालों के लिए अनिर्णय एक समस्या है।

जेमिनी आमतौर पर भावनात्मक रूप से अलग होते हैं। वे चीजों के माध्यम से अपना रास्ता खोजने के लिए अपने दिल के बजाय अपने दिमाग का उपयोग करते हैं। तर्क और कारण उनके दिशानिर्देश हैं। वे यह समझने में सक्षम होते हैं कि दूसरे लोग उनके जैसा व्यवहार करते हैं, लेकिन उन्हें शामिल व्यक्ति की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं में खुद को पेश करने में कठिनाई होती है।

> “ जेमिनी के कुछ नकारात्मक लक्षण एकाग्रता और ध्यान की कमी, निर्भरता, चंचलता, अनिर्णय, सतहीपन, इच्छाधारी सोच और स्वप्नदोष हैं। वे नटखट करने में भी बहुत अच्छे हो सकते हैं।

मिथुन राशि वालों को अपने दिमाग को नियंत्रण में रखने के लिए अपने ऊपर ध्यान देने की जरूरत है। उनका तंत्रिका तंत्र अत्यधिक प्रभावित होता है। यदि वे अपनी नसों को नियंत्रित करना नहीं सीखते हैं, तो वे बीमार होने के लिए उपयुक्त हैं। इस कठिनाई से बाहर निकलने का उपाय यह है कि स्वयं पर से बल हटा लिया जाए और दूसरों की सेवा करके इसे खो दिया जाए। सबसे बढ़कर, जेमिनी को अपनी ऊर्जा और अपने दिमाग को नियंत्रित (नियंत्रित) करना सीखना होगा।

सूर्य मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ॥**

चंद्र

चंद्रमा में मन, इच्छा शक्ति और भावनाओं को प्रभावित करने की क्षमता है। चंद्रमा जल और प्राकृतिक शक्तियों से जुड़ा है, यह एक अस्थिर ग्रह है जो परिवर्तनों से संबंधित है।

आपकी कुंडली में चन्द्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
तुला	00:43:52	चित्रा - 3
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
सातवें भाव	दशवें भाव	नहीं/बाल

चंद्र आपकी कुंडली मे बधक है

चंद्र आपकी कुंडली मे दशवें भाव मे है

दूसरे क्या सोचते हैं यह आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उपलब्धि की इच्छा आपकी भावनाओं पर हावी हो सकती है। आप परिवर्तन, महिलाओं या प्रचार के प्रबंधन या प्रबंधन के लिए एक सार्वजनिक पद धारण कर सकते हैं।

> आपके पास एक व्यक्तिगत करिश्मा है जो आपको दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम बनाता है। करियर में कई बदलाव संभव हैं।

आपको समाज के लिए सामाजिक रूप से उपयोगी होने की आवश्यकता महसूस होती है। व्यवसाय के संबंध में आप कार्य स्थितियों में कार्यभार ग्रहण करने की स्थिति चाहते हैं। आपके व्यक्तित्व पर अक्सर इस बात पर जोर दिया जाता है कि काम के भीतर किसी भी अधीनस्थ स्थिति को आसानी से बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है। अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए।

चंद्र आपकी कुंडली मे तुला राशी मे है

आप दयालु, सहानुभूतिपूर्ण, सहमत, आशावादी, निष्पक्ष और सामाजिक सुखों के बहुत शौकीन हैं। आप एक समजदार और विचारशील मित्र हैं, और दूसरों को स्वीकार्य और सराहना महसूस कराने के लिए आपके पास एक वास्तविक स्वभाव होगा। साथ ही आपके पास शायद अच्छी तर्क शक्ति और सही निर्णय लेने की क्षमता होगी। एक कलाकार के रूप में कला और संगीत से प्यार है। आपको लोगों और रिश्तों की जरूरत है।

> “ आप व्यक्तिगत चीजो से सामना या तीव्र, अप्रिय व्यवहार या भावना की किसी भी अभिव्यक्ति से बचते हैं। आप शांति, सद्भाव और सही संतुलन बनाये रखने का प्रयास करते हैं। आप मासिक शारीरिक श्रम के लिए अनुपयुक्त महसूस करते हैं और आप अपने हाथों को गंदा करने से नफरत करते हैं।

हर किसी के द्वारा पसंद किए जाने की आपकी इच्छा आपको किसी भी कीमत पर शांति की तलाश करने के लिए प्रेरित कर सकती है, इस प्रकार आप शांति बनाए रखने की अपनी इच्छा के कारण मुद्दों पर नज़रंदाज़ कर सकते हैं। आप काफी चंचल और अनिर्णायक हो सकते हैं। लोग बाहर से आपको देखकर अनुमान लगाते है जिसकी तुलना में आप बहुत अधिक अंतर रखते हैं।

कभी-कभी आपके लिए अपना मन बनाना बहुत मुश्किल होता है क्योंकि आप किसी भी मुद्दे के सभी पक्षों को देखते हैं और आप हमेशा निष्पक्ष रहना चाहते हैं। आपको अपने सिद्धांतों के लिए खड़ा होना सीखना चाहिए।

चंद्र मंत्र	**॥ ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः ॥**

मंगल

ज्योतिष के अनुसार मंगल वह ग्रह है जो साहस और तावाशाही से संबंधित है। मंगल को कार्य और विस्तार का ग्रह माना जाता है।

आपकी कुंडली में मंगल ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
धनु	28:58:09	उत्तर आषाढ़ - 1
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
चौथे, ग्यारहवें भाव	बारहवें भाव	नहीं/मृत

मंगल आपकी कुंडली मे अशुभ है

मंगल आपकी कुंडली मे बारहवें भाव मे है

आपके पास तीव्र भावनात्मक प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं और शायद दमित इच्छाएं और व्यामोह हो सकता है। लोग इसे समझ सकते हैं और आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। बदनामी से या गुप्त शत्रुओं से परेशानी हो सकती है

> आपको गहरे, छिपे हुए, आंतरिक आक्रोश को दूर करने की आवश्यकता हो सकती है।

गुप्त शत्रुओं द्वारा आप पर झूठे आरोप लग सकते हैं। आप एक अकेलापन महसूस करते हैं। आपकी ऊर्जा को जीवन के अर्थ की समझ हासिल करने और मानवता के साथ सद्भाव और एकता के विकास के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए। गुप्त रूप से या परदे के पीछे काम करने का प्यार आपको काम पाने में प्रभावी बना सकता है।

मंगल आपकी कुंडली मे धनु राशी मे है

आपके पास आदर्शवाद, दूरदर्शिता और नई सोच होगी, और आपका दिमाग अक्सर भविष्य में कुछ बड़ा करने के लिए नये विचारों,

योजनाओं और लक्ष्यों में व्यस्त रहता है। पहले से ही किये जा चुके कार्यो के बजाय आप इसमें रुचि रखते हैं कि क्या संभव है और क्या नया किया जा सकता है। दर्शन, धर्म, राजनीति, या शिक्षा जैसे विषयों में आपकी रुचि रहती हैं, और आप विशिष्ट अनुप्रयोगों की तुलना में सिद्धांतों, अमूर्तताओं और अवधारणाओं से अधिक चिंतित हैं।

> "आप किसी एक व्यावहारिक, ठोस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने के इच्छुक नहीं हैं। आप विशेष रूप से विवरण पसंद नहीं करते हैं और अपने विचारों को पूरा करने के लिए ज्यादा समय तक ध्यान केंद्रित करना आपके लिए मुश्किल हो सकता है। आप मानसिक रूप से स्वतंत्रता चाहते हैं, फिर भी आपके विचार आमतौर पर पारंपरिक तौर तरीको पर चलते हैं।

जुआ खेलने में फायदा होने पर, आप जुए, सट्टा उद्यमों और नए उपक्रमों का आनंद ले सकते हैं। आप बोल-चाल में सीधे, सरल और उच्च रहेंगे और आप हमेशा अपने मन की बात उजागर करते हैं। जो विचार आप सोचते है उनको आप लोगो क आगे सर्वप्रथम कहने में सक्षम होंगे। इस प्रकार, आपको अपनी जबान को नियंत्रित करना, चातुर्य विकसित करना और बोलने से पहले क्या बोलना चाहिए उसे सीखना होगा। व्यवसाय, विज्ञापन और प्रचार आपके लिए अच्छे करियर क्षेत्र हो सकते हैं।

आपका दिमाग तिर्व है और आप आवेगी और बहुमुखी हैं। आपके पास कई समान विषयों का अध्ययन करने, एक से अधिक नौकरी करने और एक ही समय में कई परियोजनाओं को पूरा करने की प्रवृत्ति है। आप अनुभव, ज्ञान और ज्ञान प्राप्त करने के लिए यात्रा करते रहना चाहते हैं।

मंगल मंत्र	**॥ ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः ॥**

बुध

बुध बुद्धि और शिक्षा का ग्रह है, यह वाणी और तर्क से जुड़ा है और इस प्रकार व्यक्ति के संचार कौशल पर इसका प्रभाव पड़ता है।

आपकी कुंडली में बुध ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
मिथुन	**26:09:12**	**पुनर्वसु - 2**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
छटे, नववें भाव	**छटे भाव**	**नहीं/मृत**

बुध आपकी कुंडली मे शुभ है

बुध आपकी कुंडली मे छटे भाव मे है

आपके पास कंप्यूटर और इलेक्ट्रॉनिक्स के संभावित प्यार के साथ विश्लेषणात्मक क्षमता है। यदि आप विवरणों से बहुत अधिक चिंतित हैं, तो आपकी नसें खराब हो सकती हैं, जिससे स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं।

> कोई भी खराब स्वास्थ्य गलत सोच और शायद चिंता को दर्शाता है।

नौकरी में बार-बार बदलाव की इच्छा से आप बेचैन हो सकते हैं। सेवा, संभवत मानसिक प्रकृति की, आपको आकर्षित करती है। आपके काम या कार्यस्थल में विविधता महत्वपूर्ण है। स्वास्थ्य और आहार के मुद्दों में आपकी रुचि बड सकती हैं।

बुध आपकी कुंडली मे मिथुन राशी मे है

आप एक साथ कई चीजों को पूरा करना पसंद करते हैं और यह आपके लिए एक समस्याका कारण भी हो सकता है - अपनी जिज्ञासा के प्रति संतुष्ट हो जाते है तो आप नई अवधारणाओं को समझने में और उसे पूरा करने में सक्षम होते हैं। अपने विचार या

परियोजना के प्रति आप संतुष्ट होंगे।

> आपके पास एक अत्यंत अनुकूलनीय, ऊर्जावान, सक्रिय, सतर्क, जिज्ञासु और बहुमुखी दिमाग है। आप जहा भी जाते है वहा ज्ञान की तलाश करते हैं चाहे वो पढ़ने या बातचीत के माध्यम से या यात्रा के माध्यम से हो और उन लोगों से बात करके जिनसे आप हमेशा मिलते हैं। आप काफी नर्वस महसूस करेंगे जिस वजह से आपमें कभी-कभी बहुत अधिक तनाव पैदा हो सकता है ऐसे में आपको शांत रहने की आवश्यकता है। इस तनाव को दूर करने के लिए व्यायाम एक अच्छा तरीका है। आपका मिज़ाज़ चतुर, मजाकिया हैं, और किसी भी स्थिति से निपटने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

आप हर चीज का थोड़ा-थोड़ा स्वाद लेना पसंद करते हैं - आप अपने हातों से सब करना चाहते हैं या आपका उभयलिंगी या यंत्रवत् झुकाव हो सकता है। वाद-विवाद और तर्क आपसे अपील करते हैं। उन चीजों के साथ सतह को खरोंचने की प्रवृत्ति होती है जो बहुत गहराई से सीखे बिना आपकी रुचि को प्रभावित करती हैं। यह जैक-ऑफ-ऑल-ट्रेड्स, मास्टर-ऑफ-नो पोजीशन है।

आपके अल्पज्ञान के कारन आपको खतरा हो सकता है। सफल होने के लिए मन, वचन और कर्म पर नियंत्रण जरूरी है। अपना ध्यान एक जगह पर केंद्रित करें, उसी के प्रति अपनी सोच विकसित करें। पत्रकारिता, बोलना, पढ़ाना, बिक्री, विज्ञापन या लेखन आपको आकर्षित कर सकता है। मानसिक रूप से बेचैन रह सकते है, आप बार-बार अपनी नौकरी या स्थान बदल सकते हैं, या ऐसा काम कर सकते हैं जिसमें आवाजाही, यात्रा और विविधता शामिल हो। आप अवधारणाओं को आसानी से समझ लेते हैं और उन लोगों के साथ अधीर हो सकते हैं जो जल्दी से जल्दी नहीं सीखते हैं।

बुध मंत्र	**॥ ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥**

गुरु

बृहस्पति को धन, ज्ञान, गुरु, पति, पुत्र, नैतिक मूल्यों, शिक्षा, दादा-दादी और शाही सम्मान का कारक कहा जाता है। यह जातक की धार्मिक धारणा, भक्ति और आस्था को दर्शाता है।

आपकी कुंडली में गुरु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
कुंभ	28:11:46	पूर्व भाद्रपद - 3
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
बारहवें, तीसरे भाव	दूसरे भाव	नहीं/मृत

बृहस्पति आपकी कुंडली मे अपरिभाषित है

बृहस्पति आपकी कुंडली मे दूसरे भाव मे है

आपमें आर्थिक रूप से सफल होने की क्षमता है। ऐसा लगता है कि पैसा आपके किस्मत में आ गया है और आपने शायद अपने जीवन में कभी भी खाना नहीं छोड़ा है। आपको अपनी प्रतिभा और क्षमताओं में विश्वास और आशावाद है।

> “ आपके दूरदर्शी विचार और निवेश आमतौर पर परिस्थितियों के आपके सहज मूल्यांकन के कारण समृद्ध होते हैं।

आप भौतिक संपत्ति का आनंद लेते हैं और इसे “भाग्यशाली” कहा जा सकता है। आप दूसरों में विश्वास को प्रेरित करते हैं और अपने दूरदर्शी और आदर्शवादी विचारों को विकसित करने के लिए दूसरों से वित्तीय सहायता प्राप्त करने से लाभान्वित हो सकते हैं। आपको आत्म-भोग और अति-अपव्यय से सावधान रहना चाहिए। समृद्ध, मीठे भोजन और मिठाइयों की अपनी इच्छा पर अंकुश लगाएं।

बृहस्पति आपकी कुंडली मे कुंभ राशी मे है

आप एक मानवतावादी हैं और सभी लोगों के कल्याण के लिए सोच रखते हैं। आप जीवन की सार्वभौमिकता और मनुष्य के भाईचारे में विश्वास करते हैं। सुधार और बड़े समूह की परियोजनाएं आपको आकर्षित करती हैं क्योंकि वे आपको अपने व्यक्तिगत विकास और बढ़ोतरी के लिए व्यापक अवसर प्रदान करती हैं।

> “ आप अपने आविष्कारशील दिमाग, अपने तेज निर्णय, अपनी अच्छी बुद्धि और अपनी मित्रता के कारण दूसरों के साथ अच्छा काम करते हैं।

आप सहज, सहिष्णु और मिलनसार हैं। आप लोगों के विभिन्न समूहों को संभालने के अपने कौशल के कारण एक आदर्श राजनयिक, श्रम संबंध विशेषज्ञ या कार्मिक प्रबंधक बन सकते हैं।

बृहस्पति मंत्र	**।। ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः ।।**

शुक्र

शुक्र को यौन इच्छाओं (काम), कामेच्छा, पत्नी का कारक (कारक) माना जाता है। यह जुनून, शादी, विलासिता के सामान, गहने, वाहन, आराम और सुंदरता से संबंधित है।

आपकी कुंडली में शुक्र ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
कर्क	08:36:06	पुष्य - 2
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
पाँचवें, दशवें भाव	सातवें भाव	नहीं/वृद्ध

शुक्र आपकी कुंडली मे योगकारक है

शुक्र आपकी कुंडली मे सातवें भाव मे है

आप आकर्षक, मिलनसार और दोस्ताना मिजाज़ के हैं और लोगों के लिए आपके प्यार भरे स्वभाव को देखना आसान है। साझेदारी आम तौर पर खुश और सामंजस्यपूर्ण होती है। लेकिन हर कीमत पर शांति और सद्भाव की आपकी इच्छा आपके लिए हानिकारक हो सकती है अगर आप अपनी जरूरतों के लिए खड़े नहीं होते हैं। आप एक ऐसा जीवनसाथी चाहते हैं जो आकर्षक हो और संभवत आर्थिक रूप से संपन्न हो।

> “ प्राणी आराम और अपने साथी के साथ उनका आनंद लेना वांछित है। हालाँकि, इस बात का ध्यान रखें कि आप दूसरों से बहुत अधिक अपेक्षा करने की आदत न डालें।

आप रिश्तों के मूल्य की गहरी सराहना करते हैं। स्नेह पर अत्यधिक जोर देना आपके लिए परेशानी का कारण बन सकता है। एक आदर्श रिश्ते की चाहत इतनी प्रबल हो सकती है कि आपके रिश्ते में जो भी खामियां हैं, उन्हें परे उड़ाया जा सकता है

आप एक ऐसे साथी की तलाश करते हैं जो आपको “अच्छे जीवन” की आपूर्ति कर सके। आप जीवन में सुंदरता, विलासिता और बारीक चीजें चाहते हैं और आप एक ऐसे साथी की तलाश करते हैं जो ये प्रदान कर सके। शायद शादी आपको जीवन में एक ऊंचे मुकाम पर पहुंचाएगी।

> जीवन के कामुक पक्ष पर अति-भोग और अत्यधिक जोर देने से समस्याएं हो सकती हैं। आपके पास एक ऐसा साथी होना चाहिए जो आपको लगता है कि प्रतिस्पर्धी के बजाय सहयोगी है। यदि आपकी कुंडली में शुक्र की दृष्टि खराब है, तो शायद आपके साथी के नैतिक स्तर सवालों के घेरे में हैं।

शुक्र आपकी कुंडली मे कर्क राशी मे है

आप शांत, शर्मीले, संवेदनशील, भावुक, सौम्य और रोमांटिक स्वभाव के हो सकते हैं और आपकी भावनाएँ आपके परिवार, पुराने दोस्तों, परिचित स्थानों, यादों और अतीत के गहराई से जुड़ी हुई हैं। जन्मदिन, वर्षगाँठ, पारिवारिक अनुष्ठान और व्यक्तिगत महत्व के अन्य दिनों को याद रखना और मनाना आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आप प्रेम संबंधों में देखभाल, भावनात्मक समर्थन और सुरक्षा चाहते हैं। भावनाओं के मामलों में आप परिवर्तनशील और अस्थिर हो सकते हैं।

> आप अपने घर के वातावरण में शांति और सद्भाव चाहते हैं। आप उन लोगों से जुड़े रहते हैं जिनकी आप परवाह करते हैं, एक केकड़े की तरह जो जाने नहीं देते। बहुत दूर ले जाया गया, आपका प्यार और दूसरों के लिए चिंता एक बंधन, अधिकार, रिश्ते के प्रकार में बदल सकती है।

असुरक्षा की भावना या अप्रसन्न या पोषित होने की भावना आपको बहुत अधिक खाने के लिए प्रेरित कर सकती है और इस प्रकार वजन बढ़ सकता है। आप समृद्ध या मीठे भोजन की इच्छा के कारण समस्या में योगदान कर सकते हैं। आपकी माँ का शायद आपके प्यार और स्नेह की भावनाओं से बहुत कुछ लेना-देना है। आपको आवश्यकता होना पसंद है और आपका व्यक्तिगत आकर्षण, चुंबकत्व और सहानुभूति आपको एक प्राकृतिक देखभाल करने वाला बनाती है। आपको मां के प्यार और दुलार की जरूरत है।

शुक्र मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ॥**

शनि

शनि धीमी गति से चलने वाला ग्रह है। इसे न्याय, तर्क और विनाशकारी शक्तियों का ग्रह कहा जाता है। यह आपदाओं और मृत्यु से संबंधित है। शनि को गुरु भी माना जाता है।

आपकी कुंडली में शनि ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
वृश्चिक	**11:15:43**	**अनुराधा - 3**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
पहले, दूसरे भाव	**ग्यारहवें भाव**	**नहीं/वृद्ध**

शनि आपकी कुंडली मे अपरिभाषित है

शनि आपकी कुंडली मे ग्यारहवें भाव मे है

आपके कई परिचित हैं, लेकिन केवल कुछ करीबी दोस्त हैं, शायद पुराने। आप जो दोस्ती करते हैं, वह कई सालों तक कायम रहती है। आप उन समूहों की ओर आकर्षित होते हैं जिनका कोई गंभीर या आवश्यक उद्देश्य होता है। आप जिन समूहों में शामिल होते हैं, उनके प्रति आप कर्तव्य और जिम्मेदारी की एक मजबूत भावना महसूस करते हैं।

> "आपके द्वारा किसी भी समूह के लिए किए जाने वाले कार्यों को बहुत कम व्यक्तिगत पहचान मिल सकती है और इसके लिए कड़ी मेहनत की आवश्यकता हो सकती है। अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, आपको धैर्य रखना होगा और कड़ी मेहनत करने के लिए तैयार रहना होगा।

यदि आपके सबक सीखे जाते हैं, तो जीवन का बाद का हिस्सा अधिक पुरस्कार प्रदान करेगा। कुछ कथित विशिष्टता के कारण आप अपने आस-पास के लोगों या समूहों के साथ कभी भी फिट नहीं होने की भावना का अनुभव कर सकते हैं। किसी भी मामले में दूसरों से अलग महसूस करने के संबंध में समस्या हो सकती है।

शनि आपकी कुंडली मे वृश्चिक राशी मे है

आप बहुत आत्म-अनुशासित हो सकते हैं। आपके पास कार्यकारी क्षमता है और आप बोधगम्य और अत्यंत सक्षम हैं। आपमें मानसिक क्षमता हो सकती है। आपके आरक्षित बाहरी और गोपनीयता के कारण लोगों को आपको समझना मुश्किल हो सकता है। आपका दिमाग यांत्रिक रूप से उन्मुख हो सकता है और आप सबसे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी, धैर्यवान महसूस कर सकते हैं।

> "मंगल की क्रिया और ऊर्जा सबसे अद्भुत संयोजन में शनि के पूर्वाभास के साथ संयुक्त है। आप जो कुछ भी करते हैं वह तीव्रता के साथ करते है। हालांकि, नकारात्मक पक्ष पर, हठ, बदला, क्षमा की कमी, आक्रोश और निर्ममता का खतराहो सकता है।

धन और प्रतिष्ठा के लिए कुतर्क करने की प्रवृत्ति नुकसान पहुंचा सकती है। कब्ज या बवासीर जैसे स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। आपको अपनी इच्छाओं को बदलने की जरूरत है। आपको सीखना होगा कि कब और कैसे जाने देना है। यह उन्मूलन शारीरिक कार्यों पर भी लागू होता है। अत्यधिक गुस्से को अंदर ही अंदर घुटने से गॉलब्लैडर या किडनी में स्टोन विकसित हो सकते हैं।

शनि मंत्र	**॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ॥**

राहु

अजीब और अपरंपरागत ग्रह होने के कारण राहु भौतिकवाद से सम्बंधित है और कठोर वाणी, कमी और इच्छा से सम्बंधित है। राहु को ट्रान्सेंडैंटलिज़्म का ग्रह कहा जाता है। यह विदेशी भूमि और विदेशी यात्रा से सम्बंधित है।

आपकी कुंडली में राहु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
मेष	**03:16:29**	**अश्विनि - 1**
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
कोई नहीं	**चौथे भाव**	**नहीं/बाल**

राहु आपकी कुंडली मे चौथे भाव मे है

ऐसा व्यक्ति अपनी गृह संस्कृति, संपत्ति और अपने धरती के प्रति बहुत अधिक सवेदनशील होते है। ऐसे लोग अपने मातृभूमि के प्रति महत्वाकांक्षी प्रेम के बावजूद, विदेशी लोगों की तरह, अपनी मातृभूमि में विदेशी तत्व उत्पन्न करते हैं। उनके बचपन की विशेषता एक विदेशी ट्यूटर जैसे असामान्य तत्वों की उपस्थिति से होती है। आपके माता-पिता स्वभाव से काफी तरंगी किसम के होते सकते हैं। ऐसे मूल निवासी अपनी नींव और मूल्यों को संरक्षित करना चाहते हैं, लेकिन संभावित रूप से कपटपूर्ण कारणों से, संभवतः सामाजिक विशेषाधिकार प्राप्त करने की उनकी इच्छा हो सकती है।

> “ संपत्ति के स्वामित्व, वाहन, शिक्षा और सीमाओं के विषय उनकी रुचि रखते हैं।

ऐसे मूल निवासी कभी-कभी दावा करते हैं और दूसरों की संपत्ति में निवास करते हैं और संपत्ति के स्वामित्व से जुड़े कानूनी मामलों में कुटिल हो सकते हैं। ऐसे लोग अपने भाव की साज-सज्जा और अपने ऊपर काफी ध्यान देते हैं। जातक अपने माता-पिता या किसी की प्राथमिक शिक्षा में अपनी भूमिका का अधिक प्रतिनिधित्व करने की कोशिश करते हैं। जातक के लिए अपनी मां, जमीन, संपत्ति या वाहन जैसी संपत्ति को लेकर कुछ अप्रत्याशित परिस्थितियां बन सकती हैं। इस भाव में राहु का प्रभाव बस्ती और मातृभूमि से संबंधित पुरानी परंपराओं के लिए विघटनकारी है।

राहु आपकी कुंडली मे मेष राशी मे है

मेष राशि पर मंगल ग्रह का शासन है, जिसे एक साहसी ग्रह माना जाता है। वही दूसरी ओर राहु एक हवादार ग्रह है इसलिए मंगल और राहु के बीच संबंध उतना सकारात्मक नहीं होते है। यह हवा में आग लगने के समान है इसलिए मेष राशि में राहु के साथ पैदा हुए लोग अक्सर काफी आक्रामक प्रकार के होते हैं। ऐसे जातक लापरवाह और आवेगी किस्म के होते हैं, और किसी भी पक्ष के बारे में सोचे बिना हमेशा लड़ने के लिए तैयार रहते हैं।

> “ हालाँकि, राहु एक चतुर ग्रह है। यह जातक को बहुत अधिक बुद्धि और तेज दिमाग भी प्रदान करता है।

मेष राशि में राहु के साथ जन्म लेने वाले मूल निवासीयों को अप्रत्याशित रूप से धन और सम्मान की प्राप्ति होती है। इनके अन्दर जीवन में सफल होने की प्रबल इच्छा होती है। इस भाव के जातक अपने पेशेवर जीवन में काफी दृढ़ निश्चयी और बुद्धिमान होते हैं। उनका करियर अक्सर कड़ी मेहनत और उनके द्वारा किए गए प्रयासों के कारण आगे बढ़ता है। यह जातक लोगों पर आसानी से भरोसा करने से थोडा कतराते है और कोई भी निर्णय लेने से पहले बहुत भ्रमित होते हैं। इनका गुस्सैल स्वभाव इनके वैवाहिक और प्रेम जीवन में परेशानी और मुश्किलों का कारण बन सकता है। इन जातको का स्वभाव कभी-कभी स्वार्थी और अहंकारी भी हो सकते हैं, जिसका उनके प्रेम संबंधों पर भी बुरा असर पड़ता है। कुल मिलाकर राहु के लिए यह एक अच्छी जगह है।

राहु मंत्र	॥ ॐ ऐ हरि राहवे नमः ॥

केतु

केतु मोक्ष, पागलपन का ग्रह है। यह अध्यापनशीलता से सम्बंधित है। केतु रहस्यमय, भ्रामक, गुप्त और पेचीदा ग्रह है। केतु दर्द, रहस्य, गुप्त विज्ञान, उदासीनता, दर्शन, अलगाव और कारावास का प्रतीक है।

आपकी कुंडली में केतु ग्रह की स्थिति इस प्रकार है

राशी	अंश	नक्षत्र
तुला	03:16:29	चित्रा - 3
स्वामी	भाव में	अस्त/अवस्था
कोई नहीं	दशवें भाव	नहीं/बाल

केतु आपकी कुंडली मे दशवें भाव मे है

जब केतु कुंडली में दशम भाव में होता है तो ये करियर के मामलों में सकारात्मक परिणाम लेकर आता है। यह जातक के जीवन में शक्ति, पद और धन की प्राप्ति जैसे सुखद परिणाम दिला सकता है। वह उच्च सोच और एक मजबूत व्यक्तित्व वाला इन्सान बनाएगा है और कई शिल्पों में कुशल भी। ऐसा जातक स्वयं ही ढूंढ कर अपने ज्ञान को बढ़ाने वाला व्यक्ति होता है और जीवन भर खूब नाम कमाता है। इनका प्रभाव दूसरों पर बहुत ही शीघ्र और गहरा होता है और यहां तक कि शत्रुओं से भी इनकी प्रशंसा करते है।

> “ हालांकि इनका स्वभाव कभी-कभी नकारात्मक भी हो सकता है।

पीड़ित होने पर दसवें भाव में केतु मूल निवासी को कई मामलों में मूर्ख बनाता है। ऐसा व्यक्ति फालतू के प्रयास और साधारण कामों में अपना समय व्यर्थ करता रहता है। ऐसे में जातक स्वभाव से बहुत अधिक अभिमानी हो सकता है। इनके जीवन में मानसिक शांति और पितृ सुख का अभाव होता है। ऐसे में जातक एक दुर्भाग्य पूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं और बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता हैं। वाहन चलाते समय दुर्घटना की संभावना भी बन सकती है। इसके अलावा, उन्हें काम के मोर्चे पर बाधाओं का भी सामना करना पड़ सकता है।

केतु आपकी कुंडली मे तुला राशी मे है

तुला राशि संतुलन का प्रतीक माना जाता है। यह शुक्र ग्रह द्वारा शासित होता है, जिसका केतु के साथ अच्छा संबंध माना जाता है। इसके अलावा, ये दोनों ग्रह हवादार हैं। जब केतु शुक्र द्वारा शासित राशि में प्रवेश करता है, तो यह व्यक्ति की प्रबंधन क्षमताओं को और अधिक बढ़ाता है। ऐसे लोग चीजों को कैसे संतुलित रखना चाहिए अच्छे से जानते हैं। केतु सांप की पूंछ जातक को गति की प्रवृत्ति देती है क्योंकि तुला भी एक गतिशील राशि है। जिन लोगों की कुंडली में केतु की यह स्थिति होती है, उन्हें परिवर्तन और गतिविधि की अत्यधिक आवश्यकता होती है।

> “ यहां केतु भी जातक के लिए यात्राओं का कारण बनता है। ऐसे लोगों को घूमना फिरना, नए-नए पर जाना अत्यधिक पसंद होता है।

केतु की यह स्थिति जातक में आक्रामकता प्रभावित करती है। ऐसे लोग मेहनती और चतुर होते हैं। वे अधिक बातूनी हैं और लोगों के सामने अच्छा प्रदर्शन करते हैं। ऐसे जातक जानते हैं कि दूसरों के सामने कैसे प्रतिक्रिया करना है। तुला राशि में केतु भी जातक को क्रोधी स्वभाव का बना देती है। ऐसे लोग जिद्दी और हावी होते हैं। जबकि वे आध्यात्मिक रूप से प्रवृत्त होते हैं, वे कभी-कभी बेईमान भी हो सकते हैं। तुला राशि में केतु भी कई बार जातक को परिवार पर निर्भर बना देता है।

केतु मंत्र	**॥ ॐ ह्रीं ऐं कं केतवे नमः॥**

Salasar Balaji Services

सालासर बालाजी ज्योतिष केंद

info@salasarbalaji.org

https://salasarbalaji.org

+91-954 9666 555